चन्दामामा
जुलाई १९८९

Try Me
Coconut Cream
CARAMILK
Parry's
पाँच मज़े स्वाद भरे!
ट्राइ-मी
कैरामिल्क
चॉकलेट एक्लेयर्स
कोकोनट क्रीम
कॉफ़ी बाइट
टॉफ़ी खा तो ली, लेकिन रैपर नहीं फेंकना... देखो, पैरीज़ के इन रंग बिरंगे रैपरों से तुम क्या क्या बना सकते हो.
Parry's
पैरीज़ की और भी हैं टॉफियां मज़ेदार...
छोटी और बड़ी और खूब लज़्ज़तदार.
THE KING OF SWEETS
HTA 7124

नन्हें मुन्नों की पहली पसंद
नये
डायमंड कॉमिक्स
मनोरंजन
व हंसी का
अनूठा
खज़ाना
अघोरी तांत्रिक
अंकुर
नया मकान
रोलर स्केट
मोटू पतलू
खौफनाक ड्रामा
महाबली शाका
देश की अमानत
असली हत्यारा
छोटू लम्बू
अंकुर बाल बुक क्लब
सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :—
1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे। यदि आपको वह पुस्तकें पसंद हों तो डायमंड कॉमिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।
सदस्यता कूपन
मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट से साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।
नाम ....
पिता का नाम ....
पता ....
डाकखाना .... जिला ....
खेल विषयक पुस्तकें
क्रिकेट
कैसे खेलें?
कपिल देव
डायमंड कामिक्स प्रा.लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

जादूनगरी रंगों
आओ चलें वहां,
खिलते रंग जहां.
कितने सपने, कितनी कल्पनायें तुम्हारे मन में रोज़ उभरती होंगी... हैं न? कॅमल रंगों की सहायता से इन्हें बेरोकटोक उड़ने दो.
कॅमल के रंग पास में हों तो सपने अपने आप रंग-बिरंगे रूप लेने लगते हैं
और कल्पना की फुलवारी खिलती चली जाती है.
फिर कॅमल के पास रंग भी तो इतने सारे हैं कि तुम्हारे हर सपने को उसका रंग मिल जायेगा.
बस कॅमल रंग उठाओ और रंगों की जादूनगरी में खो जाओ.
कॅमल
२५ वर्षों से हर रंग में आपके संग.

कि
कॅमलिन लिमिटेड
आर्ट मॅटेरियल डिविज़न
बंबई-४०० ०५९.
camel
STUDENTS'
Vision-CL-4

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

कुछ स्वार्थी लोग अपनी वाक्-चातुरी से अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा बताकर भोली-भाली जनता को आसानी से संतुष्ट कर अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं । इस पत्रिका में प्रकाशित कहानी 'कोलाहल का आत्मसम्मान' इसी तथ्य का उत्तम उदाहरण है।

अमरवाणी

शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खा, यस्तु क्रियावान् पुरुषः न विद्वान्,
सुचिंतितं चौषधमातुराणां, न नाममात्रेण करोत्यरोगम् ।

[किसी ने भले ही अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया हो, पर यदि उनके अनुरूप वह आचरण नहीं करता, तो वह मूर्ख ही माना जाएगा ! शास्त्र-ज्ञान के अनुरूप आचरण करनेवाले ही विद्वान् कहलाते हैं। औषध के सेवन से व्याधि दूर हो जाती है, केवल नाम लेने मात्र से रोग दूर नहीं होता !]

वर्ष : ४१ जुलाई १९८९ अंक : ११
एक प्रति : ३-०० :: वार्षिक चन्दा : ३६-००

मनुष्य और मच्छर

मच्छर अंधेरे में मनुष्यों का कैसे पता लगाकर काट पाते हैं ? हाल ही में किये गये अनुसंधानों के आधार से पता चलता है कि मनुष्य के शरीर का ताप तथा छूटनेवाली एक प्रकार की गंध मच्छरों को आकर्षित करती है ।

एक्स रे के नेत्र

डॉक्टर लोग रोग का निदान करने के लिए आवश्यक हो तो रोगी का एक्स-रे लेने को कहते हैं । पर बीजिंग के २४ वर्ष की आयु के डॉ. जेन किसुयालिंग अपने नेत्रों से ही शरीर के भीतर के कंकाल को देख लेते हैं । बचपन से ही उनके नेत्रों को यह असाधारण शक्ति प्राप्त है । इस के कारण का अब तक किसी को पता नहीं चला है ।

नाटे आदमी की मृत्यु

स्कॉटलैंड के विश्व भर के सब से नाटे निवासी टोनी (२१.५") की अपने छियालीस वर्ष की आयु में मौत हो गई ।

साइकिल पर विश्व का भ्रमण

बेंगलूर के निवासी वेंकटेश कामत और बालकृष्ण नाम के दो युवकों ने एन्.सी.सी. के सहयोग से ६०,००० कि.मि. की विश्व की यात्रा की । इस भ्रमण में वे ३०,००० कि.मि. की दूरी साइकिल पर चले, और बाकी यात्रा जहाज़ या हवाई जहाज़ से उन्होंने पूर्ण की । ईजिप्त के एक रेगिस्तान का जब ये भ्रमण कर रहे थे, तब कुछ डाकुओं ने उनको रोका और गीत गाने को कहा । गीत गाकर इन युवकों ने डाकुओं से पुरस्कार प्राप्त किया ।

प्रधान वक्ता

एक बार पांचाल राजा ने पाण्ड्य राजा के पास एक संदेशा भेजा कि वे उनके राज्य में आयोजित समारोह के लिए एक प्रधान वक्ता को भेज दें । पांचाल राजा का हेतु था कि प्रधान वक्ता को अपमानित करके वापस भेज दें ।

इस बात को जानकर पाण्ड्य राजा ने अपने मंत्री से कहा– "प्रधान वक्ता के रूप में किस को भेजना उचित होगा ?"

मंत्री ने तुरन्त उत्तर दिया– "प्रभु, और कौन यह काम कर सकता है ? हमारे विदूषक ही इस के लिए सब प्रकार से समर्थ हैं ।"

वैसे विदूषक कोई महान् पंडित तो था नहीं । पर अपनी समय-सूचकता में वह बेजोड़ था और वह एक कुशल वक्ता भी था ।

थोड़ी देर रुककर मंत्री फिर बोला–"महाराज, हमारे विदूषक की विशेषता यह है कि सामने श्रोता हो या नहीं, वह घण्टों भाषण दे सकता है । और ऐसा भाषण करनेवाला अपने राज्य में और कोई है नहीं ।"

इस निर्णय के बाद विदूषक पांचाल राज्य में पहुँचा और अपने तूफानी भाषण से केवल सभासदों को ही नहीं बल्कि, राजा को भी विस्मय में डाला । फिर वह लौट आया ।

इस के बाद पाण्ड्य राजा के नाम फिर कोई संदेशा कभी न आया ।
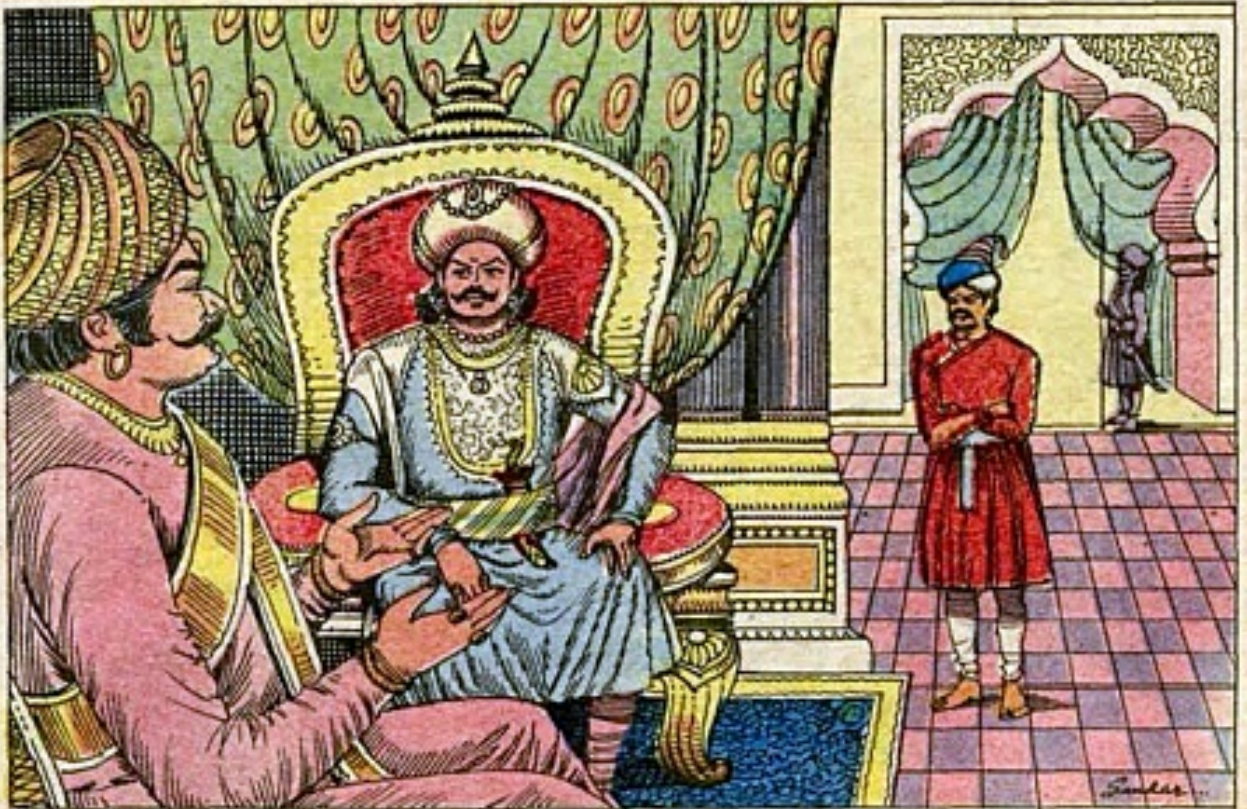
मित्र की सलाह

अपने पिता की मौत के बाद राजकुमार सूर्यकान्त स्वर्णमुखी राज्य का राजा बन गया। थोड़े ही दिनों में वह एक कुशल शासक के रूप में सुप्रसिद्ध बन गया। उसका एक घनिष्ट अंतरंग मित्र था—सुमन्त। शासन संबंधी मामलों में सूर्यकान्त अपने मंत्री धर्मचरण से बराबर सलाह-मश्विरा लिया करता था, पर अपने निजी मामलों में वह केवल सुमन्त से ही सलाह माँगता था, मंत्री से नहीं। यह उसकी अपनी निजी नीति थी।

एक दिन सूर्यकान्त शिकार खेलने निकला, तो रानी विद्याधरी ने विशेष रूप से निवेदन किया— "पतिश्री, आज मेरा जन्म-दिन है। प्रार्थना है कि आप शीघ्र लौटने का कष्ट करें।"

लेकिन शिकार खेलने में विशेष रुचि रखनेवाला सूर्यकान्त रानी की बरस-गाँठ की बात बिलकुल भूल गया। अंतःपुर पहुँचने में उसे काफ़ी विलंब हुआ। इस पर रानी विद्याधरी अपने पति पर रूठ गई। सूर्यकान्त की समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए? इस संबंध में उसने अपने मित्र सुमन्त से परामर्श किया।

सुमन्त ने सलाह दी—"दोस्त, साधारणतः स्त्रियों की यह प्रवृत्ति होती है, कि रूठकर अपने पति पर आधिपत्य जमा लें। ऐसा अवसर आने पर हमें प्रारंभ में ही उसे समूल काट देना चाहिए। अगर हम हार मान लें तो बाद में छोटी छोटी बातों को लेकर ये रूठना शुरू करेंगी। तुम चुप बैठ जाओ तो रानी का ग़ुस्सा अपने आप उतर जाएगा। तुम्हारे मन की दृढ़ता को जान कर वह फिर रूठेगी नहीं।"

सुमन्त की यह सलाह सूर्यकान्त को जँच गयी। विद्याधरी से बातचीत करने के बदले

उसने मौन धारण कर लिया । विद्याधरी ने दो दिन प्रतीक्षा की और आखिर वह स्वयं अतने पति के पास आकर कहने लगी– "सुनिए, कृपया क्षमा कीजिए, मैंने बेकार आपके दिल को दुखाया । भूल जाइएगा सब कुछ !"

सूर्यकान्त को प्रसन्नता हुई कि सुमन्त की सलाह ने बराबर काम किया ।

कुछ दिनों बाद विद्याधरी गर्भवती हुई । सूर्यकान्त ने खुशी में आकर कहा– "प्यारी रानी, इस मंगल अवसर पर जो चाहे माँग लो, मैं तुम्हें दे दूँगा ।"

विद्याधरी ने अपनी इच्छा प्रकट की–"तो स्वामी, बड़े प्रयत्नों से प्राप्त होनेवाले रत्नों का एक हार बना देंगे मुझे ?"

सूर्यकान्त ने रानी की बात मान ली । पर सब कुछ जानने पर मित्र सुमन्त ने सूर्यकान्त से पूछा– "तब तो रानी की इच्छा-पूर्ति के लिए तुम अनमोल रत्नों का हार बना देना चाहते हो ?"

"क्या करूँ ? वचन दिया है !" सूर्यकान्त ने मित्र को उत्तर दिया ।

सुमन्त ने सलाह दी– "दोस्त, कामनाओं की कोई सीमा नहीं होती । अगर एक कामना की पूर्ति करो, तो दूसरी सामने पेश होगी । मेरे विचार में अमूल्य रत्नों को प्राप्त करने का तुम्हारा प्रयत्न व्यर्थ है । तुम्हारे मन की प्रवृत्ति को जानने पर फिर कोई नई कामना तुम्हारे सामने पेश नहीं होगी । फिर आगे तुम्हारी मर्ज़ी ।"

सूर्यकान्त ने वैसा ही किया । साधारण रत्नों का हार पाकर विद्याधरी के मन में दुख हुआ । उसने निश्चय किया कि भविष्य में अपने पति के सामने कोई इच्छा प्रकट नहीं करनी है ।

एक दिन सूर्यकान्त अपने मित्रों के साथ शतरंज खेल रहा था । उस समय रानी की एक सखी ने आकर सूचना दी–"महारानी मारे सिर के दर्द के परेशान हैं । आपको शीघ्र ही बुलाने के लिए मुझे आज्ञा की गई है ।"

यह संदेश पाकर सूर्यकान्त तुरन्त शतरंज खेलना छोड़कर जाने को निकला । सुमन्त ने झट सलाह दी– "मित्र, स्त्रियाँ जब तब अपने पतियों के प्रेम की परीक्षा करने के लिए यों प्रस्ताव भेज दिया करती हैं । उचित होगा

कि थोड़े समय बाद जाओ ।"

विद्याधरी को आशा थी कि संदेश पाते ही पति-देव उसे देखने आएँगे । सखी की बात सुनकर निराश हो गई । विद्याधरी के अंत:करण की व्यथा जानकर सखी ने सान्त्वना दी– "महारानीजी, महाराज तो तत्काल चलने को तैयार हो खड़े हुए, किन्तु उनके मित्र सुमन्त ने महाराजा के कान में कुछ कहा ।"

विद्याधरी ने सखी की बातें सुनी । उसने महसूस किया कि इससे पहलेवाली घटनाओं में भी सुमन्त का ही मार्गदर्शन रहा होगा । उसने तुरन्त मंत्री धर्मचरण को बुला भेजा । आने पर पूछा– "महाराज अपने निजी मामलों में आप से सलाह लिया करते हैं ?"

"महारानीजी, अपने निजी मामलों में महाराज अपने घनिष्ठ मित्र सुमन्त से ही परामर्श किया करते हैं ।" मंत्री ने नम्रता के साथ कहा ।

अब विद्याधरी समझ गई कि उसके पति के अर्थहीन व्यवहार के पीछे मित्र सुमन्त का हाथ है ।

विद्याधरी ने सुमन्त और उसके परिवार के सदस्यों के बारे में सारी जानकारी प्राप्त करना शुरू किया । उसने मालूम किया कि सुमन्त की पत्नी बड़ी ज़िद्दी है और अपने पति की बात बिलकुल नहीं मानती । उसको अपने मनचाहे रास्ते पर लानेके लिए सुमन्त उसके साथ कठोर व्यवहार करता है । सुमन्त के दो बेटे हैं, एक बड़ा नटखट है और दूसरा बड़ा

होनहार है ।

एक दिन विद्याधरी ने अपनी पति को बुलाकर पूछा– "प्रभु, मुझे लगता है, मेरे रूठने पर आपके मन में मुझे मनवाने की इच्छा थी ज़रूर, फिर भी आप मौन रहे । मैंने मूल्यवान रत्नों का हार माँगा, वचन देने के बाद भी आपने साधारण रत्नों का हार बनवा दिया । मेरे अस्वस्थ होने पर आप व्यथित तो अवश्य हुए, पर प्रत्यक्ष रूप में कुछ कर न पाये । इन सब का कारण क्या है भला ? मुझे लगता है, किसी और के उकसाने से आपने मेरे प्रति यों व्यवहार किया ! क्या यह सब सच है जो मैं कह रही हूँ ?"

ये सब बातें सुनकर सूर्यकान्त को ताज्जुब हुआ । उसने पूछा– "हाँ, सच है, लेकिन तुमने सह सब कैसे भाँप लिया ?"

"क्यों ? यह बात तो बड़ी आसान है ! मैं आपकी मनोप्रवृत्ति को खूब जानती हूँ । पर आपकी वृत्ति और कृति में अंतर देखकर, मैंने जान लिया आपका व्यवहार अपने निजी विचारों से प्रेरित होकर नहीं हुआ है । किसी और की सलाह से आप काम कर रहे हैं ।" विद्याधरी ने समाधान किया ।

अपनी पत्नी की बुद्धिमत्ता देख सूर्यकान्त प्रसन्न होता हुआ बोला– "मैंने जो कुछ किया यह मेरे घनिष्ट मित्र सुमन्त के उपदेशों के कारण किया । निजी मामलों में वही मेरा सलाहकार है । मेरा विश्वास है कि मेरी भलाई के लिए ही वह मुझे उचित सलाहें देता है ।"

विद्याधरी ने समझाया– "प्रभु, किसी व्यक्ति पर विश्वास करने से पहले भली भाँती यह आजमाना चाहिए कि वह व्यक्ति किसी समस्या का हल सही ढंग से करने में सचमुच कुशल है या नहीं । वरना हमारे सामने नई समस्याएँ उठ खड़ी हो सकती हैं !"

"तुम जो कुछ कहना चाहती हो, ज़रा साफ़ साफ़ कह दो न !" सूर्यकान्त ने हल्के गुस्से में कहा ।

"तब स्वामी, एक काम कीजिए । सुमंत जब आइन्दा आपसे मिलने आएँगे, तब उनसे ये सवाल पूछिएगा ।" विद्याधरी ने यह कहते हुए एक प्रश्नावली सूर्यकान्त के सामने प्रस्तुत की ।

उसी दिन शाम को जब सूर्यकान्त उद्यान में खुली हवा का सेवन कर रहा था, तब सुमन्त वहाँ आ पहुँचा । सूर्यकान्त ने उससे पूछा– "मित्र सुमन्त, मैं जानना चहता हूँ कि तुम्हारे जो दो पुत्र हैं, उनके चरित्र कैसे हैं ?"

सुमन्त ने जवाब दिया– "बड़ा लड़का नटखट है, वह किसी की बात नहीं मानता । दूसरा बडा तेज़ है, आज्ञाकारी भी !"

"मान लो, दोनों ने तुम्हारी बात नहीं मानी । तब भला तुम क्या करोगे ?" सूर्यकान्त ने पूछा ।

"यह भी कोई सवाल है ? पीटने पर लड़का सही रास्ते पर आ ही जाएगा । दूसरे को ज़रा समझा-बुझाकर पुचकारा तो वह अच्छा ही है ।" सुमन्त ने अपना विचार समझाया ।

सूर्यकान्त थोड़ा रुक गया, फिर बोला–

"दोस्त, तुम मुझे जो सलाहें देते हो, मेरी पत्नी को उनका पता चल गया है । तुम अपने बच्चों के मामलों में ढंग से विचार करके होशियारी बरतते हो ज़रूर, वही होशियारी और दूरदर्शिता औरों के मामलों में भी बरतनी चाहिए— ऐसी मेरी पत्नी की तुम्हें सलाह है ।"

यह सुनकर सुमन्त को बड़ा आश्चर्य हुआ । विनय के साथ उसने कहा— "सच है महाराज, आप मेरी तरफ़ से महारानीजी को मेरी क्षमा-याचना विदित कीजिए । और कृपया भविष्य में मुझसे सलाह न माँगिए । महारानी स्वयं बड़ी मेधावी है । उनकी सलाह के अनुसार काम करना आपका धर्म है ।" फिर सुमन्त वहाँ से चला गया ।

सूर्यकान्त ने विद्याधरी को सारा वृत्त कथन किया और फिर अपनी जिज्ञासा प्रकट की— "मेरी समझ में नहीं आता कि सुमन्त ने तुमसे क्षमा क्यों माँगी और तुम्हारी सलाह के अनुसार चलने का सुझाव क्यों दिया ?"

विद्याधरी ने मुस्कुराकर कहा— "प्रभु, सुमन्त की पत्नी बडी हठीली है और वह पति की बात बिलकुल नहीं मानती । उसको गही रास्ते पर लानेके विचार से वह भले ही रूठे, सुमन्त पत्नी को मनाने की कोशिश नहीं करता । अगर वह गहने माँगे तो नहीं बनवाता । पत्नी अस्वस्थ हो, तो वह विश्वास नहीं करता, उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित नहीं करता । उसको डर है कि ऐसा करने पर शायद वह और भी हठीली बन जाए । सुमन्त सोचता है कि औरों की पत्नियाँ भी उसीकी पत्नी के समान हैं । इसी विचार से उसने आपको यों सलाहें दीं । मेरी तरफ़ से जो प्रश्न आपने उससे पूछे, उनसे वह अपनी ग़लती समझ गया, और उसने मुझ से क्षमा माँगी । ये ही प्रश्न मैं उससे पूछ सकती थी, पर इनसे वह दुखी हो जाता । इसी लिए आपके माध्यम से मैंने ये प्रश्न पुछवाये । अतः उसने मुझे विनयशील बताया ।

सूर्यकान्त ने हँसते हुए कहा— "प्रिये, तुम बड़ी समझदार हो ।" दोनों एक दूसरे से बहुत प्रसन्न हुए ।

कोलाहल का आत्म-सम्मान

मातंग देश के राजा ने एक बार अपने राज्य में कुछ नए ढंग से सुधार लाना चाहा । नए कार्यक्रम को अमल में लाने के लिए उसने अपने राज्य को बारह समान भागों में विभाजित किया और एक एक पर एक राज-प्रतिनिधि की नियुक्ति की । उनमें से एक था इन्द्रसेन, जो सब से आलसी था ।

इन्द्रसेन को छोड़ बाकी सारे राज-प्रतिनिधि अपने क्षेत्र के प्रत्येक गाँव का दौरा करके जनता के सुख-दुखों को जान लेते । पर मल्लपुरम् का इन्द्रसेन अपने सुविधापूर्ण निवास में बैठकर विविध ग्रामों के मुखियों के पास संदेश भेज कर उन्हें अपने निवास-स्थान पर बुला लेता । वह कभी घर से बाहर न निकलता ।

इन्द्रसेन ने एक बार सीतापुर गाँव के मुखियों को आमंत्रित किया । निमंत्रण पाकर गाँव के चार प्रमुख व्यक्ति मल्लपुरम् जाने के लिए तैयार हुए । यह समाचार पाकर गाँव का एक युवक कोलाहल हो-हल्ला मचाने लगा । उसने कहा –

"राज-प्रतिनिधि को चाहिए कि वह खुद समस्त ग्रामों में भ्रमण करके वहाँ की जनता के सुख-दुखों को जानने का प्रयास करो । अगर इन्द्रसेन अपना रवैया नहीं बदलता, तो हम देश के राजा के पास शिकायत ले जाएँगे ।" यों कोलाहल ने ग्रामवासियों को उकसाया ।

कोलाहल सीतापुर में अभी अभी आया था । वह बड़ा मिलनसार था और सब के साथ मीठी बात करता था । सभी ग्रामवासी उसे चाहते थे । थोड़े ही दिनों में वह गाँव में प्रसिद्ध हो गया था । उसका सुझाव सुनकर ग्रामवासी मुखियों से अनुरोध करने लगे कि वे इन्द्रसेन से मिलने के लिए जाने का कष्ट न उठाएँ ।

"बसुन्धरा"

गाँववालों की इच्छा जानकर चारों मुखिये कुछ घबड़ा गये। उनको डर था कि राज-प्रतिनिधि अगर ग़ुस्सा कर बैठें, तो उनकी हानि कर सकता है। पर जब सारी जनता यह मामला अपनी प्रतिष्ठा का विषय मानती है तो इसका विरोध कैसे करें?

इस लिए सभी मुखियों ने राज-प्रतिनिधि के दूत को सारा हाल कह सुनाया और कोलाहल का सारा वृत्त बताया। उन्होंने इन्द्रसेन को संदेश भेजा—"इस हालत में हम लोग आने से मजबूर है। कृपया ग़लत न समझें।"

सब कुछ जानकर कोलाहल की पत्नी ने पति को नसीहत दी—"तुम तो खामखा राज-प्रतिनिधि से झगड़ा मोल रहे हो। हम लोग आज तक आराम से इस गाँव में अपने दिन गुज़ार सके, जाने भविष्य में क्या कष्ट झेलने पड़ेंगे!"

कोलाहल ने पत्नी को समझाया—"तुम समझती नहीं, मानव जन्म धारण करनेवाले हर व्यक्ति को मानव का सा जीवन बिताना चहिए। अधिकारियों के सामने अगर हम गुलाम बन कर 'हाँ जी' करते रहें, तो उस जीवन का मूल्य ही क्या है? इन्द्रसेन को हमारे गाँव में आना ही पड़ेगा। तभी हमारे गाँव का नाम होगा। हम जिस गाँव में रहते हैं, उसकी प्रतिष्ठा का ख्याल हमें नहीं रखना चाहिए?"

अपने पति की आत्म-सम्मान की भावना की पत्नी ने मन-ही-मन तारीफ़ ही की।

चार-पाचँ दिन बाद इन्द्रसेन का दूत दुबारा गाँव में आया और उसने संदेश सुनाया—"इन्द्रसेन इधर कुछ दिनों से अस्वस्थ हैं। वे अपना इलाज करते हुए भी जनता के सुख-दुख जानता चाहते हैं। उनकी इस हालत को देखते हुए सभी ग्रामवासी उनसे मिलने के लिए मल्लपुरम् पहुँच रहे हैं। इन्द्रसेन ने विशेष रूप से कहला भेजा है कि वे सीतापुर के ग्रामवासियों की प्रतिष्ठा में ठेंस नहीं लगाना चाहते। बल्कि अन्य सभी गाँववालों से उन्होंने सहयोग का जो अनुरोध किया है, वैसा ही वे सीतापुरवासियों से चाहते हैं। यह बात विस्तार से समझाने के लिए इन्द्रसेन ने अन्य प्रमुख व्यक्तियों के साथ इस बार कोलाहल को भी आने की प्रार्थना की है।"

यह संदेश पाकर सीतापुर के मुखियों की समझ में नहीं आया कि अब क्या करें? वे लोग मल्लपुरम जाना तय करें तो इधर कोलाहल हंगामा मचाता । अगर उसको मल्लपुरम चलने का अनुरोध करें तो उसके सम्मान में धक्का लगेगा, और वह जाने क्या कर बैठेगा !

लाचार होकर मुखियों ने कोलाहल को बुला भेजा और उससे सलाह की । उन्होंने कोलाहल को अपने साथ आने की प्रार्थना की ।

अब कोलाहल थोड़ा बदल गया । सहानुभूति के साथ उसने कहा—"मुझे मालूम नहीं कि इन्द्रसेन अस्वस्थ हैं । शायद इसी लिए सभी गाँवों से लोग उससे मिलने जा रहे हैं । राज-प्रतिनिधि के बीमार होने के कारण जब लोग उनके पास जा रहे हैं, अगर हमारा ही गाँव सहयोग न दें तो हम असभ्य समझे जाएँगे । चलिए, हम पाँचों जाकर इन्द्रसेन के दर्शन करेंगे ।"

चारों मुखियों ने ठंडी साँस ली । कोलाहल ने सभी ग्रामवासियों को मीठे शब्दों में अपनी बात समझा दी ।

राज-प्रतिनिधि के दूत ने जब यह समाचार दिया कि सीतापुर के प्रमुख व्यक्तियों के साथ कोलाहल भी मिलने आ रहा है, तो इन्द्रसेन खिल-खिलाकर हँस पड़ा । पीछे बैठे हुए वृध्द ने आश्चर्य के साथ पूछा—"मेरी समझ में नहीं आता कि आत्म-सम्मान की बात कहकर जिस कोलाहल ने हंगामा मचा रखा था, अब वही आपका संदेश पाकर तुरन्त चला आ रहा है ।' कैसा अचरज है?"

उत्तर में राज-प्रतिनिधि ने वृद्ध को समझाया—

"अपने स्वार्थ और यश के लिए जनता को उकसानेवाले लोग हमने कई देखे हैं । कोलाहल ऐसे ही स्वार्थी महात्माओं में से एक है । ये जनता का कल्याण नहीं चाहते, बल्कि नेता बनकर राजाओं से आदर-इज़्ज़त पाना चाहते हैं ।"

इन्द्रसेन का विश्लेषण कितना सही था !

पिता और पुत्र

सूरजसिंह को तिजोरी की चाभियों की खोज करते देख सत्यनारायण देखता ही रह गया ।

"तिजोरी की चाभियाँ तुमने देखी हैं ?" पिता ने सिर उठाकर पुत्र की ओर देखते हुए पूछा ।

"हाँ, मैंने छिपा रखी हैं ।" सत्यनारायण ने कहा । "तुमने छिपा रखी है ? चलो, दे दो मेरे हाथ ।" सूरजसिंह ने कहा ।

"देखो, मेरे साथ तमीज़ से बात करना सीखो । समझे? आजतक तुमने मुझे बहुत भोला समझ रखा है । आइन्दा तुम मेरे साथ इज़्ज़त से बात न करोगे तो मैं चुप नहीं रहूँगा । तुम्हें पकड़कर अच्छी मरम्मत करूँगा तुम्हारी ! अब तुम्हें पीटना, मेरी बारी का काम है । आज तक तुम अपनी ही चलाते रहे । अब आइन्दा मेरी चलेगी । मैं जो चाहूँ वही इस घर में होगा । समझे?" पुत्र ने धमकी दी ।

"मेरी इज़्ज़त की बात चाहे जो हो, मुझ जैसे बड़े आदमी का तुम अपमान कर रहे हो । यदि यही रवैया रहा, तो रसोइन से लेकर सब कोई मेरा अपमान करेंगे । मेरी इज़्ज़त धूल में मिला देंगे । मैं वह सहन नहीं कर सकता । तुमने अपने को क्या समझ रखा है? हमारे रूप अदल-बदल गये इसका कितना नाजायज़ फायदा उठाओगे?" सूरजसिंह ने कहा ।

"मैं तो अनपढ़ हूँ, मगर तुमने तो इतना पढ-लिख लिया है। तुम को सब आसान रहेगा न?" सत्यनारायण ने और ही चिढ़ाया।

"मैं तो पाठशाला बिलकुल नहीं जाऊँगा।" सूरजसिंह ने साफ़ कह दिया।

"नहीं जाओगे, तो मास्टरजी खुद आकर तुम्हारे हाथ बाँधकर ले जाएँगे। तब तो झख मार कर जाओगे न?"

"अरे दुष्ट, यह बेइज़्ज़ती भी कराओगे?"

"तुम ने भी तो मेरे साथ यही व्यवहार किया है न आज तक?"

थोडी देर सोचकर सूरजसिंह ने पूछा, "क्या मास्टरजी खूब पीटते हैं?"

"हूँ, मार-पीट कर कचूमर निकाल देते हैं। चाहे तुम पाठशाला में अपना पाठ पढ़ो या न पढ़ो, वे पीटे बिना नहीं रहेंगे। उनका सिद्धान्त है, कि दण्ड देने पर ही बच्चे सही रास्ते पर चलते हैं। वे हमारी भलाई के लिये नहीं पीटते, बल्कि अपने हाथ की खुजली मिटाने के लिए। इतना ही नहीं, उन्हें जब भी दूसरा कुछ नहीं सूझता, वे बच्चों को मार-पीट कर खुश हो जाते हैं।" सत्यनारायण ने अपने मन की बात कही।

"मास्टरजी मुझे भी पीटें तो?" सूरजसिंह ने चिन्तित स्वर में पूछा।

"और जब उन्होंने मुझे पीटा था तब? तुमने ही उनसे कहा था न, कि मारने-पीटने में संकोच न करें?" सत्यनारायण ने ग़ुस्से में

"मुझसे जैसे बन पड़ेगा, वैसे मैं घर के मामले निबटा लूँगा। तुम ने इससे पहले मेरे हाथ कभी एक कौड़ी तक नहीं दी। अब तुम भी समझ सकोगे। कल से मेरी जगह तुम्हीं पाठशाला में जाकर पढ़ाई करो। तुम्हें भी पता चल जाएगा, कि मास्टरजी कैसे क्रूर आदमी हैं। मैं स्कूल जाने से क्यों कतराता था, यह तुम अब समझ जाओगे। अब स्कूल के मज़े खूब चख लो।" सत्यनारायण अपनी ही बात चलाता रहा।

यह सुनकर सूरजसिंह जलभुन कर रह गया। फिर ज़रा रुककर उसने कहा, "अरे कम्बख़्त! मैं पचास साल का हो गया हूँ। अब मुझे तुम पाठशाला में जाकर दूसरे दर्ज़े में पढ़ने की सलाह दे रहो हो?"

पूछा ।

आकृतियों के बदलने का फायदा उठाकर पुत्र बदला लेने का प्रयत्न कर रहा है, यह देख पिता के क्रोध का पारा चढ़ गया ; पर उससे कुछ करते न बना ।

उसने गुस्से से कहा, "तुम समझते हो, कि मैं तुम्हारा यह खेल चलने दूँगा । मैं अभी सब से कह दूँगा कि तुम कौन हो और मैं कौन हूँ । तुम शायद इस बहाने से बचना चाहते होगे ?"

इसपर सत्यनारायण ठहाके मार मार कर हँसने लगा । उसकी हिम्मत भी अब बढ़ने लगी ।

"हाँ, हाँ ; ज़रूर बुलाओ ; घर भर के सारे लोगों को बुलाओ । उनसे जो कहना है, कह डालो । मगर तुम जो सच्ची बातें कहोगे उस पर विश्वास न कर, वे मेरी बात का ही विश्वास करेंगे यह बात पक्की ! तुम अब प्रत्यक्ष ही देखोगे ।" इतना कहकर लड़के ने रसोइन को पुकारा ।

रसोइन उनके सामने आकर खड़ी हो गयी । सूरजसिंह ने उससे कहा, "सीतालक्ष्मी, देखो तो मैं सूरजसिंह हूँ और यह रहा सत्यनारायण ! हम दोनों की आकृतियाँ बदल गयी हैं ।"

रसोइन ने नाक पर उँगली रखकर उससे कहा, "अरे कम्बख़्त, अब तुम्हारी पिटाई निश्चित है ।"

सत्यनारायण रसोइन को देख मुस्कुराते हुए बोला, "यह सत्यनारायण भूख से परेशान है । पित्त से उसका दिमाग फिर गया है । इसलिए वह इस प्रकार बकवास कर रहा
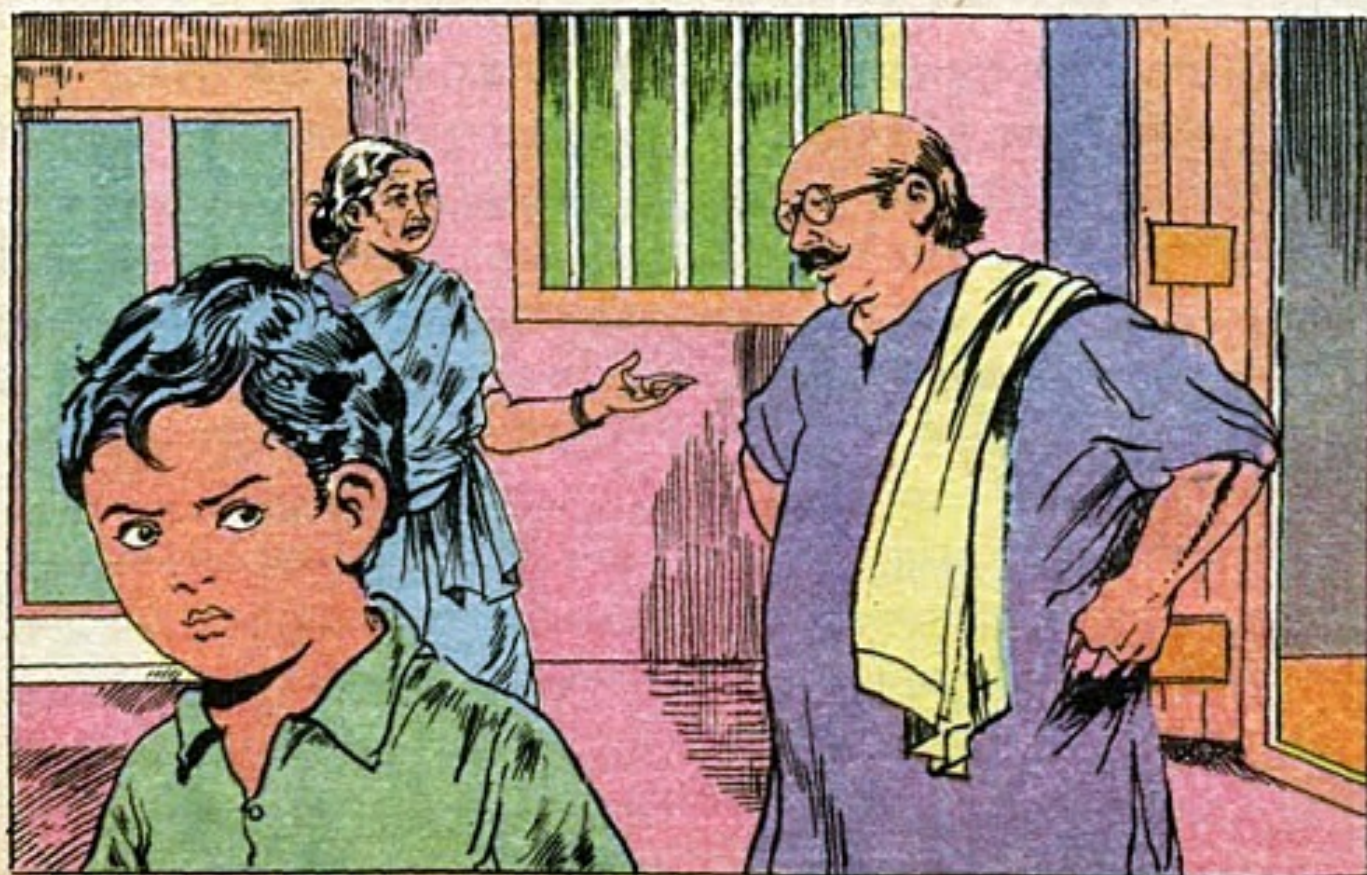
है । इसको ले जाकर भरपेट बड़े खिला दो ।"

"हाँ, हाँ ! यह दुष्ट अंट-संट बक रहा है । इसकी हड्डी-पसली तोड़ने के बजाय इसे खिलाने-पिलाने की सिफारिश क्यों कर रहे हैं । इसे आप ने जो लाड़-प्यार दिया है, उसीका यह फल है ।" इतना कहकर रसोइन सूरजसिंह की बाँह पकड़कर उसे घसीट ले गयी ।

रसोई घर में सूरज सिंह ने रसोइन को सच्ची बात बताने का लाख प्रयत्न किया, पर कोई फायदा न रहा । इसके बाद उसने अपने घर के नौकर को भी समझाने का प्रयास किया ।

"अरे वीरवर्मा, मैं तुम्हारा मालिक सूरजसिंह हूँ ।"

वीरवर्मा ने आँखें मल कर कहा, "मालिक, इस में शक ही क्या है ?"

"क्या तुम सचमुच ही यह मानते हो ?" सूरजसिंह ने उत्साह में आकर पूछा ।

वीरवर्मा खिल खिलाकर हँस पड़ा और वहाँ से चला गया ।

अब सूरजसिंह को लगा कि वह पागल होता जा रहा है । क्यों कि, किसीने भी उसकी बातों का विश्वास नहीं किया । उल्टे उसके पुत्र सत्यनारायण से वे सारी बातें कह डालीं ।

उसी रात सत्यनारायण ने सूरजसिंह से सलाह दी, "सुनो, तुम जल्दबाजी में आकर ये बातें सब लोगों को सुनाओ, तो वे तुमको पागल मानकर वैद्यों के पास भिजवायेंगे । इससे भला यह होगा कि, चुपचाप पड़े रहो, जो कुछ होना है, होने दो ।"

रसोइन के मन में बच्चे के प्रति सहानुभूति पैदा हुई । बेचारी यह तो नहीं जानती थी, कि वह स्वयं मालिक सूरजसिंह है । उसने सोचा– 'बेचारा बच्चा पेट दर्द का बहाना बनाकर पाठशाला न गया तो पिता ने उसे नाश्ता तक देने से वंचित रखा । उसको थोड़ा बहुत खिलाना चाहूँ, तो मालिक दुलहिन की भाँति रूठकर ऊपरी तल्ले में जाकर बैठे हैं ।'

इतने में रसोइन को याद आया कि घर में चावल-दाल इत्यादि चीज़ें खतम हो गयीं हैं ; इसलिये ऊपर जाकर वह मालिक से बोली, "मैं ने सुबह ही चावल लाने को कहा था, पर आप अभी तक नहीं लाये । चावल के साथ

और सामान भी लेते आना । आज नहीं तो कल लाना ही तो है ।"

ये बातें सुनकर पिता के वेष में बैठा सत्यनारायण खिलखिलाकर हँस पड़ा । फिर अपनी हँसी पर काबू करके बोला, "अच्छी बात है, अवश्य ला दूँगा ।"

सदा गंभीर रहनेवाले सूरजसिंह का इस प्रकार बच्चे जैसी हरकतें करना और हँसना रसोइन को कुछ अजीब सा लगा । मगर उसने इस पर ज्यादा विचार नहीं किया । सत्यनारायण उठा, जेब से तिजोरी की चाभी निकाली । तिजोरी में रखे धन को देर तक गिना और एक बड़ी रकम जेब में डालकर बाहर निकल पड़ा ।

मालिक के बाहर निकलते ही रसाइन ने पुकारा, "सत्यनारायण, सत्यनारायण !" पर उसे कहीं लड़के की आहट सुनाई नहीं दी । पिता की अनुपस्थिति में सत्यनारायण जहाँ भी होता, वहाँ से कोलाहल सुनाई देता था । मगर अब हर कहीं शान्ति छायी हुई थी । उसने सारे मकान में लड़के को ढूँढ़ा और अन्त में उसे अपने पिता के दफ्तरवाले कमरे में मेज़ के सामने विचारमग्न स्थिति में क़ुर्सी में बैठा हुआ पाया । रसोइन ने उसे घुड़की दी, "कितनी बार तुम्हें पुकारा, बोलते क्यों नहीं ?"

सूरजसिंह चौंक पड़ा, सिर उठाकर बोला, "तुम क्यों मुझे इस प्रकार सता रही हो ? अपना काम क्यों नहीं देख लेती ?"

"सुनो, मैं तो तुम्हारी भलाई के लिये ही कह रही हूँ । तुम ही उल्टे अपनी हैसियत से बढ़कर ज्यादा बात कर रहे हो ।" इतना
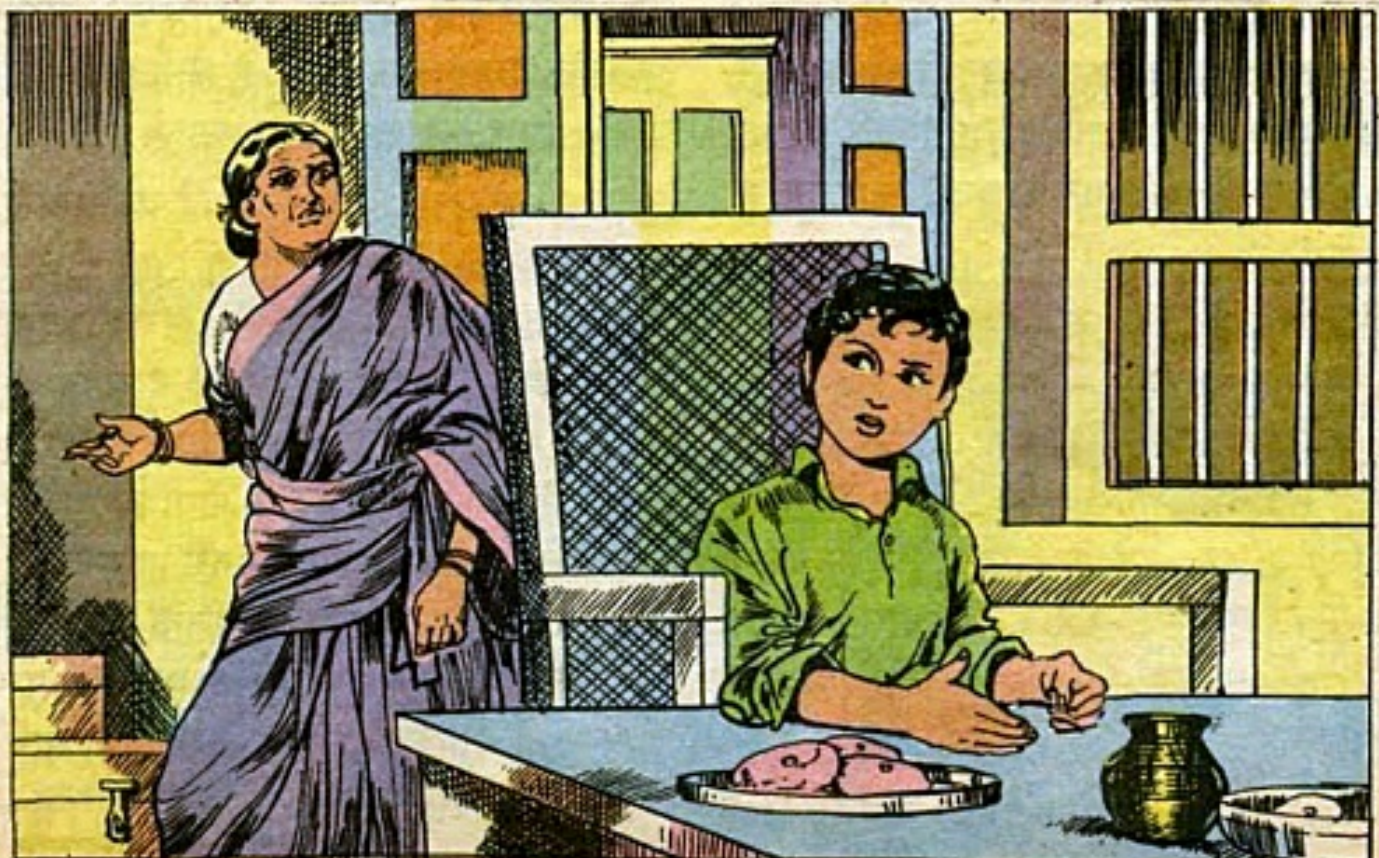
कहकर वह रसोईघर में जाकर एक थाली में लड्डू और बड़े लेकर आयी ।

थाली देखकर सूरजसिंह को पहले कुछ डरसा लगा । मगर उसे महसूस हुआ कि अपने पेट में खलबली मची हुई है और वह उन पदार्थों पर टूट पड़ा । सारा खाना खा लेने पर उसकी सारी थकावट दूर हो गयी । इतनी सारी चीज़ें खाने पर भी उसे पेटदर्द नहीं हुआ ; उल्टे देह में कुछ फुर्ती सी आ गयी ।

उस क्षण तक शरीर के परिवर्तन के कारण सूरजसिंह कुछ परेशान था, मगर अब इसीसे उसे कुछ फायदे दिखाई देने लगे । बहुत दिनों से उसे बदहज़मी की शिकायत थी, वह दूर हो गयी । उसका शरीर हल्का हो गया था, इसलिये शौक से वह उछल-कूद भी सकता था । कुछ दिन तक बाहरी मामलों से मुक्त हो निश्चिन्त रहा जा सकता है, इस विचार से भी उसे खुशी हुई ।

उधर सत्यनारायण के मन से भी आकृति बदलने के कारण चिन्ता जाती रही । वह तिजोरी से जेब में रुपये डालकर सीधे दूकान पर पहुँचा । दूकानदार से कोई मोल-तोल किये बगैर रसोइन की बतायीं सारी चीज़ें उसने खरीद लीं और दूकानदार को उनका दाम चुकाया । एक कुली के सिर पर सामान का बोझ़ लदवाकर घर की ओर निकला । फिर रास्ते में उसने अपने लिये कुछ शीशे की गोलियाँ और एक बन्दरवाला खिलौना खरीदा ।

रास्ते में कई बुज़ुर्ग उसे देख आदर से प्रणाम कर रहे थे । पहले तो सत्यनारायण के समझ में नहीं आया, कि वे सब उसी को प्रणाम कर रहे हैं ; मगर जब वह सही बात समझ गया तब उसे बड़ा संतोष हुआ । अब मैं सब को धोखा दे सकता हूँ, इस विचार से उसके मन में गुदगुदी हो रही थी । रास्ते में प्रणाम करनेवालों में कुछ अपरिचित थे, तो कुछ परिचित भी । उसके मन में यह डर रहा कि अपरिचितों में से कोई अपने साथ बातचीत करने लग जायें, तो कैसी दुरवस्था होगी ! मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ ।

(क्रमशः)

साधु का इलाज

कोसल देश की महारानी एक बार बीमार हुई । राजवैद्यों ने अनेक प्रकार से इलाज किया, लेकिन कोई असर न हुआ । महाराज के रिश्तेदार तथा मित्र सदा महारानी के पास बैठकर उन्हें सान्त्वना देते रहे ।

एक बार महाराज को समाचार मिला कि हिमालय से कोई साधु राजधानी में आये हुए हैं । साधु का स्वागत करके उन्होंने साधु का आतिथ्य किया । बाद में महाराज ने निवेदन किया कि महारानी किसी दीर्घ व्याधि का शिकार हो गयीं है, इससे वे चिन्तित हैं ।

साधु ने महारानी के रोग का निदान किया और उसके बारे में राजवैद्यों से चर्चा की । फिर जरा सोच-विचार के बाद रानी के ठीक न होने का कारण जान लिया ।

राजा से मिलकर साधु ने कहा, "महाराज, महारानी के व्याधि-मुक्त न होने के कारण मैंने ढूँढ़ निकाले हैं । उनकी व्याधि बड़ी ही विचित्र है । पापियों की हवा लगते रहने से वे स्वस्थ नहीं हो पा रही हैं । इसलिये आप ऐसा प्रबन्ध कीजिये, जिससे कि कोई भी पापी उनके समीप तक न पटके । ऐसा करने पर मेरी औषधियों का महारानी पर ठीक असर पड़कर वे यथाशीघ्र ठीक होंगी ।"

साधु की बातें सुनकर राजा विस्मय में आ गये । रानी के प्रति श्रद्धा भक्ति रखनेवाले लोग, जो उन का परामर्श करने जाते हैं, उन में पापी कौन हैं, इस बात का पता कैसे लगाया जाए, यही समस्या उसके सामने थी ।

लेकिन साधु ने राजा से जो बातें कीं थीं, उन को राजपरिवार के लोग जान चुके थे । वे अब रानी के पास जाने से डरने लगे । खुद राजा भी उनके पास जाने से कतराने लगे कि कहीं उनके अपने पापों का कलंक रानी पर न जाये । साथ ही उन्होंने यह भी आदेश दिया

स्वप्ना घोष

कि रानी की परिचारिकाएँ भी रानी खुद घण्टी जाकर उन्हें बुलाने तक उससे दूर ही रहें ।

इसके बाद साधु से प्राप्त औषधियों का सेवन कर महारानी एक सप्ताह के अन्दर ही स्वस्थ होकर चलने फिरने लगीं ।

साधू के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए राजाने कहा, ''साधुमहाराज, मेरे दरबार में कई नामवर वैद्य हैं । पर वे भी यह समझ नहीं पाये कि महारानी अत्यन्त विचित्र व्याधि से पीड़ित हैं और उन्हें पापियों की हवा नहीं लगनी चाहिये ।''

साधु ने इस पर हँसकर कहा, ''आप के दरबारी वैद्यों ने महारानी को उचित दवा देने में कोई भी भूल नहीं की थी । महारानी को उन्होंने जो औषधियाँ दी थीं, वही मैंने दी हैं । मगर मेरे इलाज की ख़ासियत यह है, कि पापियों की हवा रानी को लगने न पाये ।''

साधु की बातें राजा के समझ में न आयीं । वे साधु की ओर अविश्वास भरी निगाहों से देखते रहे ।

इसपर साधु ने समझाया, ''महाराज, प्रत्येक रोगी के लिये औषधियों के साथ विश्राम की भी आवश्यकता होती है । राजपरिवार के रिश्तेदार व मित्र सदा-सर्वदा महारानी को घेरे रहते थे और वे विश्राम करने से वंचित रह जाती थीं । साथ ही उन्होंने अपनी बातों से उनके मन में डर पैदा करा दिया, कि वे किसी भयानक व्याधि से पीडित हैं । इसलिये यह सब रोकने के लिये और महारानी को पूर्ण विश्राम दिलाने के लिये मैंने यह 'पापियों की हवा' का भूत छोड़ दिया । वास्तव में ऐसी कोई बात ही नहीं है ।''

''तो 'पापियों की हवा न लगने' का आप का कल्पित नुस्खा है ?'' राजा ने पूछा ।

''जी हाँ, मेरी इस बात से हर कोई रानी के पास जाने से इस विचार से डर रहा था, कि अगर रानी को कोई हानि पहुँच जाये तो सब उसका कारण उसी व्यक्ति को मानेंगे । इससे रानी को पर्याप्त विश्राम मिला और मेरी औषधियाँ कारगुज़र हुईं । महारानी की बीमारी वैसे बहुत ही साधारण बीमारी थी ।'' साधु ने स्पष्ट किया ।

बेताल कथा

भिखारीदास की कहानी

दृढव्रती विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आए, वृक्ष से शव को उतारा और उसे कंधे पर डालकर हमेशा की तरह श्मशान की ओर चलने लगे । तब शव में वास करनेवाले बेताल ने पूछा– "राजन्, इस अर्ध रात्रि के समय इस भयानक श्मशान में आप जो परिश्रम उठा रहे हैं, उन्हें देख मेरे मन में आपके प्रति दया उत्पन्न हो रही है । मैं नहीं समझता कि आप किस उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए इन सब यातनाओं को झेल रहे हैं । लेकिन एक बात याद रखिए – आप अपनी इच्छा से प्रेरित होकर यदि किसी और की सलाह से यह सब कर रहे हैं तो आपको अवश्य निराश ही होना पड़ेगा । इस हालत में आपका सलाहकार व्यक्ति आपको अयोग्य समझ कर अपने मन में संतुष्ट होगा । भिखारीदास नामक एक ग़रीब व्यक्ति के बारे में ऐसा ही हुआ । उसकी कहानी मैं आपको सुनाता हूँ । अपने
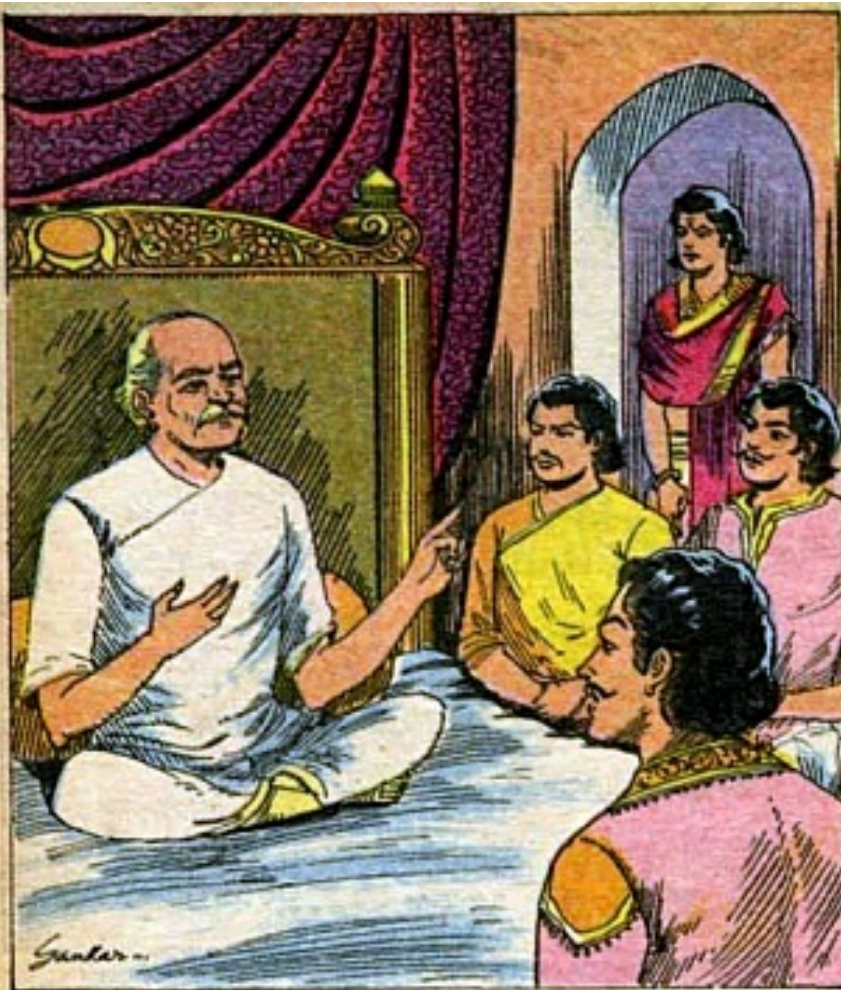
श्रमों को भुलाने के लिए इस कहानी को सुन लीजिए ।"

बेताल कहानी सुनाने लगा—

प्राचीन काल में राजधानी नागपूर में धर्मदास नाम का एक आदमी रहता था । वह अपने परिश्रम से संपन्न बना था । अपनी वृद्धावस्था में उसने अपने चारों पुत्रों को पास में बुलाकर कहा— "मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी है कि तुम लोगों ने विविध विद्याएँ अच्छी तरह सीख ली हैं । लोग तुम्हारे पास सलाह माँगने आते हैं । पर तुम जो सलाहें देते हो, उनमें मुझे कुछ असंबद्धता दिखाई देती है । अगर अयोग्य लोगों को तुम सलाह न दो, तो तुम्हारा कुछ नुकसान नहीं होगा ।"

ज्येष्ठ पुत्र रामदास को छोड़ धर्मदास के बाक़ी तीन लड़के अपने अपनी हैसियत के मुताबिक नगर के अन्यान्य मुहल्लों में रहा करते थे ।

धर्मदास का बड़ा लड़का न्यायशास्त्र-पारंगत था । उसे राज-दरबार में न्यायाधीश के सलाहकार का पद प्राप्त हुआ । वह बड़ी योग्यता के साथ अपने पद का उत्तरदायित्व निभाता था ।

एक दिन रामदास के पास एक ग़रीब आदमी पहुँच गया, जिसका नाम था भिखारीदास । उसने रामदास को अपनी रामकहानी सुनाई ।

भिखारीदास ग़रीब था । उसके पास और कुछ संपत्ति न थी, केवल एक खपरैलवाला मकान था । उसमें अपनी पत्नी व बेटी के साथ रहकर वह ज्यों-त्यों अपने दिन गुज़ारता था । पर अब नगर के एक अमीर धनगुप्त ने उसका वह मकान खरीदना चाहा । भिखरीदास ने अपना मकान बेचने से साफ़ इनकार किया । इस पर एक दिन धनगुप्त उसके घर पहुँचा और उसको धमकाया— "मैं तुम्हें चार दिनों की अवधि देता हूँ । तुमने अपना मकान मुझे नहीं बेचा तो मैं गुंडों को बुलाकर तुम्हारे परिवार को यहाँ से खदेड़ दूँगा ।"

अब भिखारीदास के सामने बड़ी समस्या उठ खड़ी हुई । करूँ तो क्या करूँ ?

रामदास ने सलाह दी— "न्यायाधिकारी के पास शिकायत करो ।"

भिखारीदास ने दीनतापूर्ण स्वर में प्रार्थना की– "देखो, न्यायाधिकारी और धनगुप्त के बीच घनी मित्रता है। मुझे नहीं लगता कि मेरे प्रति न्याय होगा। कोई और उपाय सुझाकर मेरी रक्षा कर सकोगे? वे दूध का दूध और पानी का पानी कर देंगे।"

रामदास ने थोड़ी देर सोचा और फिर कहा– "अगर तुम्हारी धारणा है कि न्यायाधिकारी से तुम्हें न्याय नहीं मिलेगा तो दूसरा उपाय तुम्हें सुझाता हूँ। हर मंगल को राजा आम जनता की शिकायतें सुनते हैं। कल ही मंगल है। तुम जाकर राजा के दर्शन करो। वहाँ तुम्हें अवश्य न्याय मिलेगा।"

"वैसे धनगुप्त मेरे शत्रु तो नहीं है। मैं नहीं चाहता कि बड़ों के साथ बेकार वैर मोल लूँ। मैं एक बार धनगुप्त को धमकी दूँगा। इससे अगर कुछ फायदा नहीं हुआ, तो फिर राजा से शिकायत करूँगा। यदि मैं धनगुप्त को धमकी दूँगा तो वे अवश्य डर जाएँगे।" भिखारीदास ने अपना विचार प्रकट किया।

रामदास ने सुझाया– "तब तो ऐसा करो। आजही न्यायालय में जाकर वहाँ रखी पुस्तक में अपनी शिकायत दर्ज़ करो। उसमें लिख दो कि यदि मेरे साथ जबर्दस्ती हुई तो मैं जाकर राजा से शिकायत करूँगा। अंत में अपना पता लिखना न भूलना। फिर न्यायाधिकारी तुम्हें बुला भेजेंगे। कुछ दिन उनके फ़ैसले की प्रतीक्षा करो। अगर इसमें से कुछ नहीं निकला, तो राजा से मिल सकते हो।"

भिखारीदास ने रामदास के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। वहाँ से निकला और सीधे धर्मदास के दूसरे पुत्र वीरदास के यहाँ पहुँचा। अपनी समस्या उसके सामने रखते हुए कहा– "मैं तुम्हारे भाई के पास जाकर आया हूँ। उन्होंने मुझे न्यायसंबंधी सलाह दी है ज़रूर। पर एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि इस बीच गुंड़े आकर मेरे घर पर हमला बोल दें तो मैं क्या करूँ?"

"सुनो, गुंडों और पहलवानों के गुरु भीमराज के पास एक नामी शिष्य है सिंहबल। वह बीस साल का नौजवान है। पर वह बड़े से बड़े पहलवान को भी हरा

व्यापारी आ जाते हैं, तो राजा उसी को बुलाताहै । माल की गुणवत्ता आज़माने में, हानि-लाभ का अंदाज़ा लगाने में, गुण-अवगुण का निर्णय करने में, यथोचित वार्तालाप करने में, उसकी कुशलता पर महाराजा को पूर्ण विश्वास था ।

भिखारीदास ने रत्नदास को अपना सारा हाल कह सुनाया— "तुम्हारे भाइयों ने मुझे बड़ी अच्छी सलाह दी है । पर निर्बल और बलवानों की लड़ाई में न्याय भले ही निर्बल पक्ष में हो, फल सदा उनके अनुकूल संभव नहीं होता । सब लोग मिलकर मुझे सलाह दे सकते हैं कि मैं अपना मकान धनगुप्त को ही बेच दूँ । धनगुप्त स्वयं मेरे मकान के लिए पाँच हज़ार मुद्राएँ देने के लिए तैयार हैं । तुम मेरे मकान का सही मूल्यांकन कर सकते हो, इसलिए मैं तुम्हारी सलाह लेने आया हूँ ।"

इस पर रत्नदास ने कहा— "तुम्हारा मकान शहर के केन्द्रीय स्थान में है । उसका मूल्य कम-से-कम पचास हज़ार मुद्राएँ होना चाहिए । वराह गुप्त तो तुम्हारा मकान ६० हज़ार देकर खरीदने को तैयार है । अपने दामाद के लिए इस इलाके में वह घर ढूँढ़ रहा है ।"

रत्नदास को धन्यवाद देकर अब भिखारीदास ब्रह्मदास के पास पहुँचा । ब्रह्मदास धर्मदास का चौथा पुत्र था । उसने वेद, उपनिषद तथा काव्यों का संपूर्ण अध्ययन किया था । महाराजा भी दर्शन

सकता है । वह एक साथ दस गुंडों को गिरा सकता है । तुम अपनी समस्या उसके सामने रखोगे, तो वह तुम्हारी मदद करेगा । हमारे महाराजा का भी उस पर विश्वास है कि वह गुणी लोगों की ही सहायता करता है ।" वीरदास ने भिखारीदास को नेक सलाह दी ।

"तुम राजा के सेनापति के पास काम कर रहे हो, इसलिए तुम इन सब बातों को जानते हो । यह सुझाव देकर तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है । मैं तुम्हारा बहुत एहसानमन्द हूँ ।" यों धन्यवाद देते हुए भिखारीदास रत्नदास से मिलने चला ।

रत्नदास धर्मदास का तीसरा पुत्र था । नगर के मशहूर व्यापारियों में उसका तीसरा क्रमांक था । जब राजधानी में विदेशी

संबेंधी अपनी शंकाओं के निवारण के लिए ब्रह्मदास से सलाह-मशिवरा करते थे । वह राज-दरबार में मंदिरों के विभाग का काम करता था ।

भिखारीदास ने ब्रह्मदास को अपनी सारी कहानी सुनाई– "मेरा यह मकान पैतृक संपत्ति के रूप में मुझे प्राप्त हुआ है । मेरे पिताजी ने अपनी मृत्यु के समय यह मकान मेरी बेटी के नाम कर दिया । वह मेरी इकलौती बेटी है । एक अच्छा रिश्ता देख मैं उसकी शादी करना चाहता हूँ । इस बीच धनगुप्त ने मेरा यह मकान हड़पनेकी अपनी योजना बनाई है । मेरे मकान पर कब्ज़ा करने को और कोई उपाय न बचा तो वह सोच रहा है कि उसके पुत्र की शादी मेरी पुत्री के साथ कर दे । पर मेरे विचार में धनगुप्त का पुत्र मेरे दामाद बनने लायक़ नहीं है । मैं यह सब तुमसे इस लिए कह रहा हूँ कि तुम इस समस्या का कुछ हल निकाल सको ।"

ब्रह्मदास ने पल भर सोचा और कहा– "राजधानी में संपन्न होनेवाले हर विवाह के लिए राज-दरबार के पुरोहित ज्ञानमिश्र की स्वीकृति होना आवश्यक है । साधारण स्थिति में उनको विवाह की निमंत्रण-पत्रिका भेजना काफी है । उन्हें निमंत्रण दें तो वे प्रत्येक विवाह में संमिलित होते हैं । तुम उनके सामने अपनी समस्या रखो तो हो सकता है, वे इस विवाह को रोक सकते हैं ।"

भिखारीदास ने ब्रह्मदास को धन्यवाद दिए और वह वहाँ से चल दिया ।

इस घटना के कुछ दिन बाद समाचार

मिला कि भिखारीदास ने अपनी पुत्री का विवाह धनगुप्त के पुत्र के साथ कर दिया है। भिखारीदास ने नगर के बाहर रास्ते में एक जगह खरीद ली, वहाँ पर एक झोंपड़ी बना ली और उसमें रहने लगा।

जब धर्मदास के चारों पुत्रों को यह खबर मिली तो उन्होंने आपस में मिलकर देर तक इस बात पर चर्चा की। वे इस निर्णय पर आये कि उन्होंने एक अयोग्य व्यक्ति को सलाह दी। बेहतर था कि वे सलाह न देते।

यह कहानी सुनाकर बेताल ने राजा से पूछा– "राजन्, धर्मदास के पुत्रों का यह विचार कि उन्होंने एक अयोग्य व्यक्ति को सलाह दी ग़लत नहीं है क्या ? भिखारीदास ने उनकी सलाहें सुनकर धनगुप्त को धमकी दी, पर धनगुप्त कच्चे गुरु का चेला न था, वह ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। इसका तात्पर्य यह कि उनकी सलाहें कार्य-सिद्धि के अनुकूल नहीं थीं। इस मेरी शंका का समाधान अगर जानकर भी तुम न दोगे तो तुम्हारा सिर फट कर उसके टुकड़े टुकड़े हो जाएँगे।"

इस पर राजा विक्रमार्क ने कहा– "इस बात में ज़रा भी संदेह नहीं है कि धर्मदास के पुत्रों ने भिखारीदास जैसे अयोग्य व्यक्ति को सलाहें दीं। यदि वह रामदास की सलाह के अनुसार राजा से मिलता, या वीरदास के सुझाव के अनुसार भीमराज के शिष्य सिंहबल से मदद माँगता, या इसी प्रकार रत्नदास तथा ब्रह्मदास की सलाहों पर अमल करना तो धनगुप्त ज़रूर झुक जाता। पर भिखारीदास इन चारों द्वारा प्राप्त सलाहों पर अमल करने की हिम्मत न कर सका। उसकी इसी दुर्बलता से परिचित धनगुप्त ने इसका अनुचित लाभ उठाया। बस यही तथ्य की बात है।"

राजा के इस प्रकार मौन होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हुआ और पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

राजा की चिंता

जयसिंह मगध देश के राजा थे । रात में छद्म-वेष में राज्य में संचार करने की उनकी आदत थी । एक बार रात को जयसिंह अपने सलाहकार गुणनिधि के साथ भ्रमण करने निकले । नगर की सीमा पर डाकुओं ने उन पर हमला किया. ।

राजा तथा गुणनिधि ने डाकुओं से लड़ने के लिए अपनी तलवारें खींच लीं । लेकिन डाकुओं ने उन्हें घेर कर निहत्था कर दिया । उनके पास कोई धन-संपत्ति न पाकर डाकू नाराज़ हो गये, और उन्हें गालियाँ सुनाते हुए चलते बने ।

दूसरे दिन राजा जयसिंह ने दरबार बुलाया । पर डाकुओं द्वारा अपमानित होने की घटना याद करके वे चिंतित-से बैठे रहे । थोड़ी देर बाद राजा ने दरबरियों से कहा—"इस सभा में अनेक बुध्दिशाली लोग उपस्थित हैं । मेरे मन में एक शंका पैदा हुई है । आप लोगों को इसका समाधान करना होगा । क्या किसी मनुष्य का मूल्य उसके रूप तथा वेष-भूषा पर आधारित होता है? एक स्थान पर सम्मानित होनेवाला व्यक्ति दूसरे स्थान पर अपमानित हो सकता है? इसका कारण क्या है?"

आधा घंटा बीत गया । पर राजा की शंका का समाधान करनेके लिए कोई दरबारी उठ खड़ा नहीं हुआ । गुणनिधि ने सोचा कि राजा की चिंता दूर करने के लिए यही एक अच्छा अवसर है । उसने उठकर कहा—"महाराज, प्रत्येक मनुष्य का मूल्य वह कहाँ पर बैठता है और कैसी वेष-भूषा करता है उस पर निर्भर करता है!"

राजा ने पूछा—"केवल कहने भर से क्या प्रयोजन सिध्द हो सकता है? किसी उदाहरण के द्वारा इसे प्रमाणित कर सकते हैं?"

विमला गर्ग

अब गुणनिध ने एक वस्त्र एक बार सिर पर बांधा, एक बार कंधे पर डाल दिया और एक बार अपने हाथ में लेकर एक दरबारी से पूछा—"यह क्या है?" बारी बारी से तीन जवाब मिले— "पगड़ी," "उत्तरीय" और "गमछा" ।

अब गुणनिधि ने राजा की ओर मुखातिब होते हुए पूछा—"देखा न महाराज? वास्तव में मेरे हाथ में एक ही वस्त्र है । लेकिन जब जब उसका स्थान बदला, तब उसका नाम भी बदल गया । एक और दृष्टान्त मैं आप को देना चाहता हूँ । देखिए ।"

गुणनिधि सभा-भवन से बाहर गया और एक लकड़ी का टुकड़ा ले आया । गुणनिधि ने लकड़ी के उस टुकड़े को एक दूसरे दरबारी के सामने रख कर उसे उस पर लात मारने को कहा । दरबारी ने वैसा ही किया ।

अब गुणनिधि ने उसी लकड़ी के टुकड़े मेंएक दरबारी शिल्पी द्वारा भगवान की मूर्ति गढ़वा दी । गुणनिधि ने उस लकड़ी की प्रतिमा को उसी दरबारी के सामने रख कर उस पर लात मारने को कहा । दरबारी ने अपने गालों पर चपत लगाई और श्रध्दा-भक्ति से उस मूर्ति को प्रणाम किया । और वह वहाँ से चला गया ।

इस घटना के बाद गुणनिधि ने राजा से कहा—"महाराज, आप ने ध्यान से देखा न? कहते हैं, ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ भगवान का अस्तित्व न हो । इसका मतलब यह कि लकड़ी के टुकड़े के अन्दर भी भगवान विद्यमान है । लेकिन जब लकड़ी का टुकड़ा भगवान का रूप धारण करता है, तभी लोग भगवान मान कर उसकी पूजा करते हैं । इसी प्रकार राजसी वेष-भूषा में आप रहें, तब आप को महाराजा के रूप में पहचान कर प्रजा आप का आदर करती है । अगर आप साधारण नागरिक के वेष में और न पहचानने की स्थिति में हो तो आपका अनादर भी हो सकता है ।"

राजा जयसिंह ने गुणनिधि की बातों का तथ्य अच्छी तरह समझ लिया और संतोष के साथ मुस्कुरा उठे । बस, अब राजा के मन की चिंता दूर हो गई ।

चन्दामामा पुरवणी-९
ज्ञान का ख़ज़ाना

इस महीने का ऐतिहासिक व्यक्तित्व

हरी किशन

हरी किशन अकेला ही ऐसा था कि जो पाँच साल की उमर में ही सिक्खों का गुरु बना। गुरु हरी राय के इस छोटे लड़के का जन्म ७ जुलाई, १६५६ को हुआ था।

इतनी सी छोटी उमर में भी उसे अपनी जिम्मेदारियोंका पूरा एहसास था। वह शान्त और प्रतिष्ठित था। मुग़ल दरबार में उसके बारे में शिकायत थी, इसलिये सम्राट ने उसे बुला भेजा। अम्बर का राजा जयसिंग भी उसे दिल्ली जाने के लिये उकसाता रहा। हरी किशन जब दिल्ली गया तब उसी ने उसका सम्मान से स्वागत किया। मगर उसे चेचक हुआ और दिन-ब-दिन उसकी हालत बिगड़ती गयी। उसके अनुचरों को लगा कि अब उसका अन्त-समय निकट आया है और वे रोने लगे। मगर उसने उन्हें रोने से मना कर भगवान के भक्ति-गीत गाने की सूचना की। अपनी उमर के आठ साल पूरे होने से पहले ही ३० मार्च, १६६४ को उसकी मृत्यु हुई।

वह कौन ?

एक साधु ने एक यज्ञ संपन्न किया। समारोह के अन्त में उसने अपनी सारी संपत्ति दान में देना शुरू किया। साधु के छोटे से लड़के को लगा, कि अब उसे भी किसी के हाथ दान में सौंपा जाएगा। "पिताजी, मुझे कौन ले जाएगा?" वह बालक साधु से बार बार यही पूछता रहा। धार्मिक विधि में मग्न वह साधु, लड़के के बार बार यही पूछने से गुस्सा हो गया और उसने कहा, "मैं तुम को यम के हाथ सौंप देता हूँ।" लड़का तुरन्त मृत्यु के देवता यम के निवास की ओर चल पड़ा। यम तो अपने निवास में नहीं थे। मगर लड़का लगातार तीन दिन उसकी राह देखते द्वार पर खड़ा रहा। लड़के की लगन से प्रभावित होकर यम ने उसे तीन वर प्रदान किये। लड़का यह जानना चाहता था कि मृत्यु का रहस्य क्या है? और मृत्यु के बाद किसी की आत्मा का क्या होता है? मन में न होते हुए भी यम को उसे मृत्यु का रहस्य समझाना पड़ा।

इस दन्तकथा का यह लड़का कौन था?

(पृष्ठ ८ देखिए)

विज्ञान के मज़े
वह स्थिर रहता है ।

सूचनाएँ:

व्हॅक्यूम क्लीनर (हेअर ड्रायर भी उपयोग में ला सकते हैं ।) का पाइप इस तरह उलटा कर रखिये कि उसमें से हवा का प्रवाह ऊपर की ओर चलता रहे । और जब कि हवा का प्रवाह इस तरह चलता रहता है, उस प्रवाह में पिंगपाँग की एक गेन्द छोड़ दीजिये । अगर गेन्द प्रवाह में टिकती न हो, तो पाइप की स्थिति बदल बदल कर गेन्द प्रवाह में टिके ऐसा कीजिये ।

क्या होता है और क्यों?

जब गेन्द ठीक ऊँचाई में रखी जायेगी, तब वह बिना नीचे गिरे थरथराती हुई हवा के प्रवाह के गिर्द ही उछलती रहेगी । आप अगर बारीकी से देखेंगे, तो आप को लगेगा कि तेज़ चलती हवा के प्रवाह के केन्द्र की ओर गेन्द आकर्षित होती रहती है ।

हवाके प्रवाह के केन्द्र में हवा सब से तेज़ चलती रहती है । इससे गेन्द की एक बाजू पर दूसरी बाजू से हवा का दबाव ज़्यादा रहता है और इसी कारण बाहर की बाजूपर होनेवाला अधिक दबाव गेन्द को केन्द्र की ओर ढकेलता रहता है । स्थिर गति से चलनेवाली हवा के उस पर होने वाले आघात और उसके गिर्द घूमने की पध्दति में बदल के कारण गेन्द प्रवाह में ही उछलती रहती है ।

पिंगपाँग की गेन्द हवा के प्रवाह में स्थिर करा सकनेपर, अब छः इंच व्यास वाला हवा से भरा रबर का गुब्बारा, उस गेन्द से कोई एक फुटभर ऊपर रखने की कोशिश कीजिये । अगर गुब्बारा बहुत हलका लगा, तो उसको जहाँ बाँधा जाता है वहाँ एक कागजको पकड़े रखनेवाली क्लिप लगा दीजिये । गुब्बारा अगर बहुत बड़ा लगा, तो उस से आप एकाध छोटा सा सिक्का टाँग दीजिये, जिससे वह ज़रा नीचे आयेगा ।

क्या हवा के प्रवाह में आप अन्य प्रकार की गेन्दें भी रख सकेंगे? यह भी कर के देखिये कि व्हॅक्यूम क्लीनर का सिरा या हेअर ड्रायर कितनी दूर ले जाने से पिंगपाँग की गेन्द और गुब्बारा हवा केप्रवाह में टिक नहीं सकते ।

संसार के आश्चर्य

ईस्टर टापू के अद्‌भुत पुतले

दक्षिण पॅसिफिक महासागर के ईस्टर टापू (आयलंड) में एक कतार में खूब बड़े बड़े पुतले हैं । उनके पीछे कोई चमत्कार छिपा हुआ है । वे ३ से ३६ फुट तक ऊँचे हैं । उनमें से एक तो ६६ फुट ऊँचा है । उसका वजन ८० टन तक है ।

ये पुतले एक ज्वालामुखी के पास बनाये गये थे । उनकी इस जगह पर उनको कैसे लाया गया? आधुनिक तन्त्रकुशल लोग भी यह बता नहीं पाये । इनको किसने, और क्यों बनवाया यह भी कोई नहीं जानता ।

PACIFIC OCEAN

EASTER ISLAND

0 5km

CHANDL
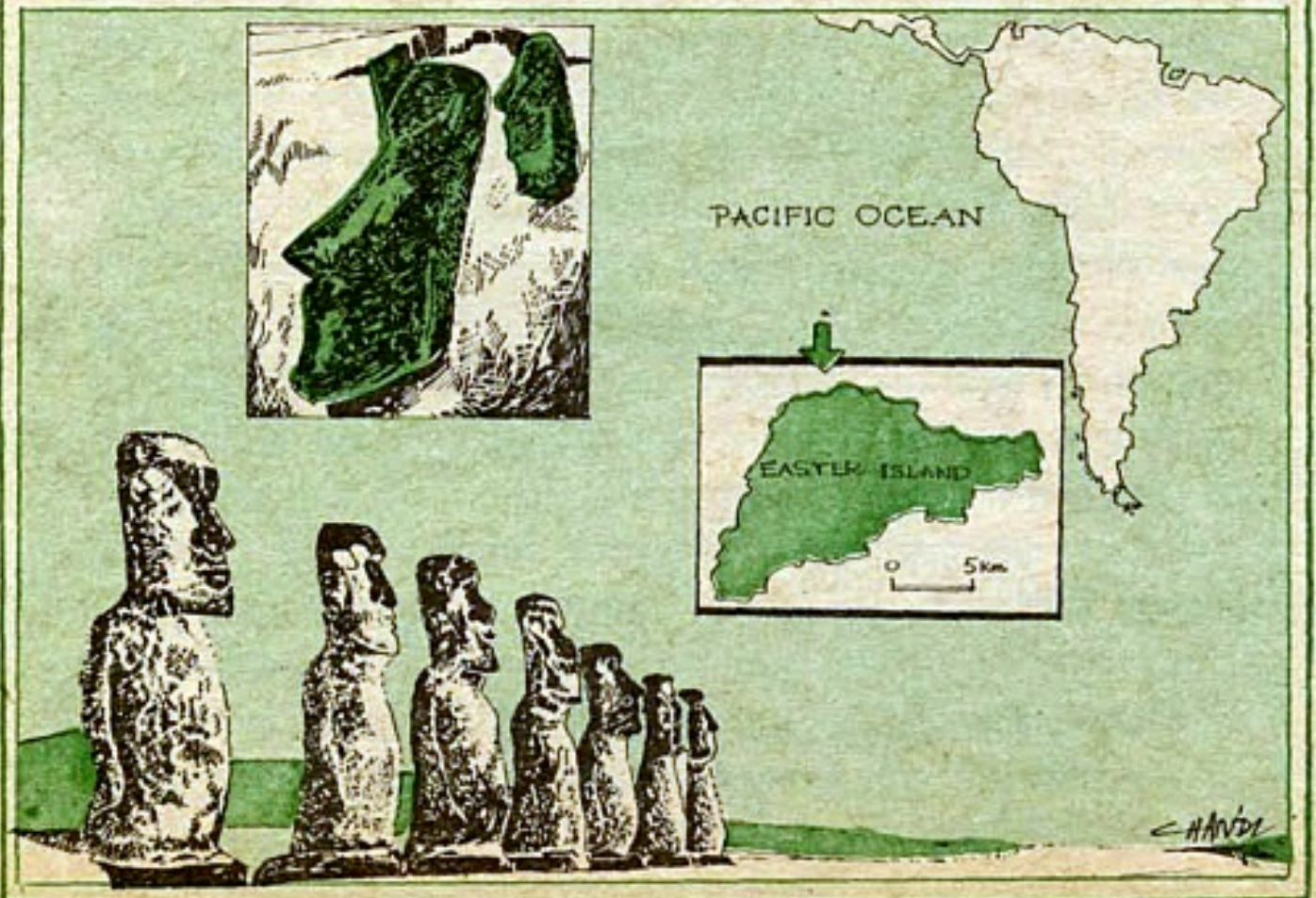
संसार की महान् घटनाएँ

एक नये देश का जन्म

भारत में बुद्ध के रहते, पूर्वी भारत के एक राजघराने का राजकुमार, जिसका नाम था विजय सिंह, अपने सात सौ जवान अनुचरों के साथ समुद्र पार कर के किसी अनजान क्षितिज की ओर अपने जहाज़ को लेकर चला गया । वे सब एक टापू पर पहुँचे । टापू घने जंगल और पहाड़ों से भरा हुआ था । केवल कुछ लोगों का एक छोटा कबिला वहाँ रहता था, जो अपने इस छोटे से क्षेत्र को छोड़ बाकी दुनिया के बारे में कुछ नहीं जानता था । विजय सिंह और उसके अनुचरों ने उनको जंगल के और ही अन्दर खदेड़ा और वहाँ विजय को अपना राजा बनाकर एक राज्य की स्थापना की । बाद में विजय के कुछ लोग फिर समुद्र पार कर दक्षिण भारत के मदुरा नगरी में पहुँचे । उन्होंने पाण्ड्य राजा से उसकी बेटी को अपनी रानी बनवाने की अनुमति माँगी और अपने साथ उनके राज्य की और सात सौ लड़कियों को ले जाने की अनुमति भी माँगी, जिनसे विजय के अनुचर शादी करना चाहते थे । राजा ने पाण्ड्य राजकुमारी के साथ सात सौ लड़कियों को भेजने का इन्तज़ाम किया । विजय और उसके लोगों की शादियाँ संपन्न हुई । विजय के उपनाम 'सिंह' को लेकर उस टापू का नामकरण हुआ 'सिंहल' । सम्राट अशोक के पुत्र महिन्द्र ने इस टापू की यात्रा कर विजय के वारिसों को बुद्ध धर्म सिखाया । आगे चलकर महिन्द्र की बहन संघमित्रा भी वहाँ गयी । अपने साथ वह बोधिवृक्ष की एक शाखा भी ले गयी, जिसके नीचे बैठकर बुद्ध को ज्ञान मिला था । उसका लगाया वह वृक्ष आज भी वहाँ मौजूद है ।

MADURAI
ANURADHAPURA
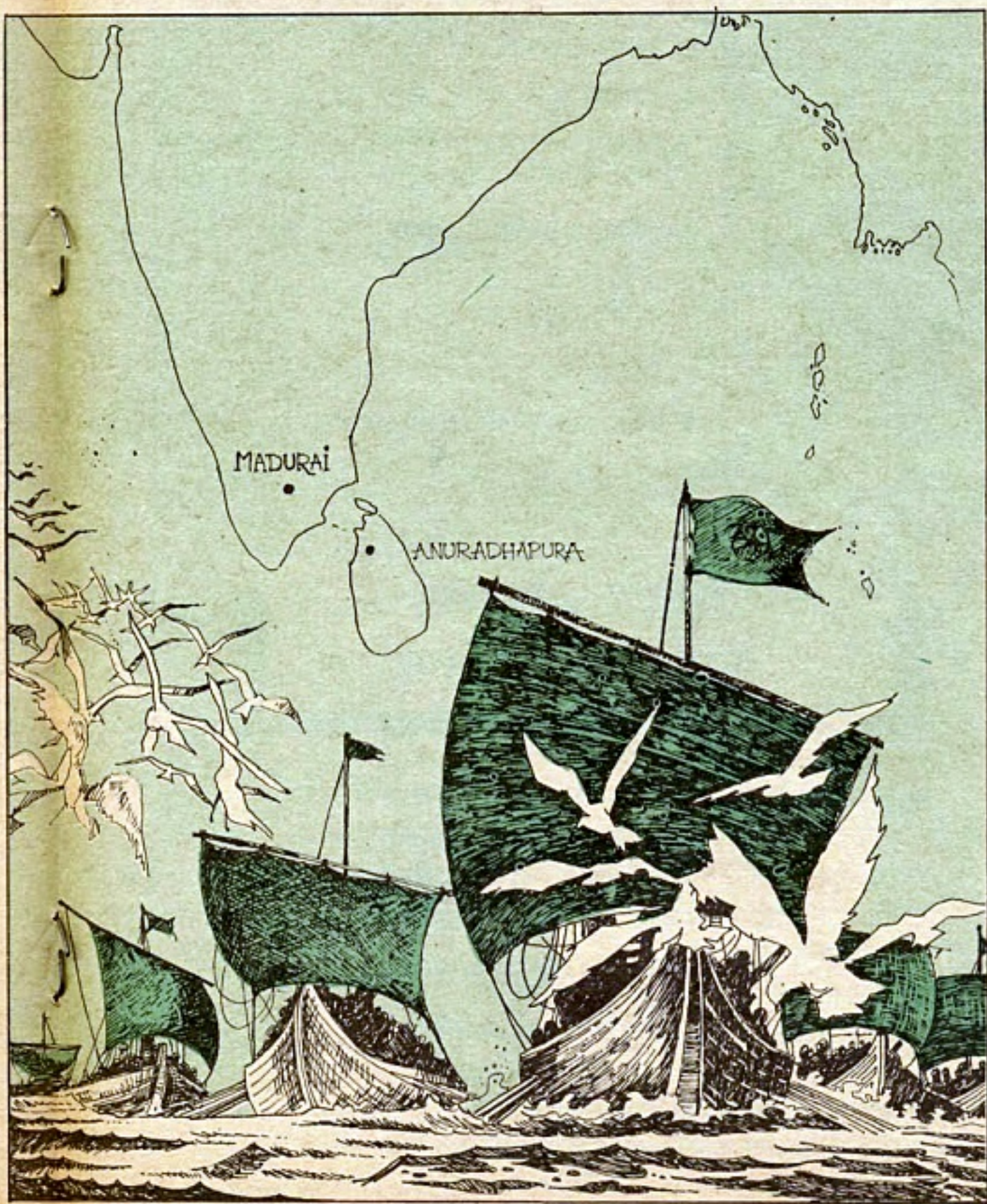
१. कौनसे मुग़ल सम्राट ने नया धर्म ज़ाहिर किया?

२. उस धर्म का नाम क्या था?

३. उन शब्दों का अर्थ क्या है?

४. अल्लाउद्दिन खिलजी के चित्तौड पर हमलों का कौनसे दो राजपुत नेताओं ने सामना किया?

५. प्राचीन कथा की कौन सी रानी का वे संरक्षण कर रहे थे?

६. उनके अपने राज्यों के नाम क्या थे?

७. पांडवों की बनायी नगरी का नाम क्या था?

८. पहले उस जगह का नाम क्या था?

९. कौरव जहाँ रहते थे उस नगर का नाम क्या था?

१०. ये दो शहर कहाँ थे?

(पृष्ठ ८ देखिये)

विज्ञान, आविष्कार और खोज की दुनिया

१. येशु ख्रिस्त कौन भाषा में बोलता था?

२. कौन राजा शिक्षक का काम करके अपना जीवनयापन करता था?

३. केवल युकेलिप्टस के पत्ते खाकर जीने वाला कीड़ा कौन?

४. आजतक बँधे गये मज़ारों से सब से बड़ा मज़ार कौन सा है?

५. वह कौन था जो अपनी केवल आठ सप्ताह की उम्र में अपनी मातृभाषा में सहजता से बोलने लगा?

६. कौन सी वनस्पति मेंढ़कों को खा जाती है?

७. रेशम का कीड़ा कितना लंबा धागा बना सकता है?

८. दुनिया का सब से बड़ा घण्टा कहाँ पाया जाता है?

९. कौन से पक्षि बहुत लम्बी उमर जीते हैं?

१०. सूर्य के अन्दरूनी हिस्से का तापमान क्या होता है?

(पृष्ठ ८ देखिये)
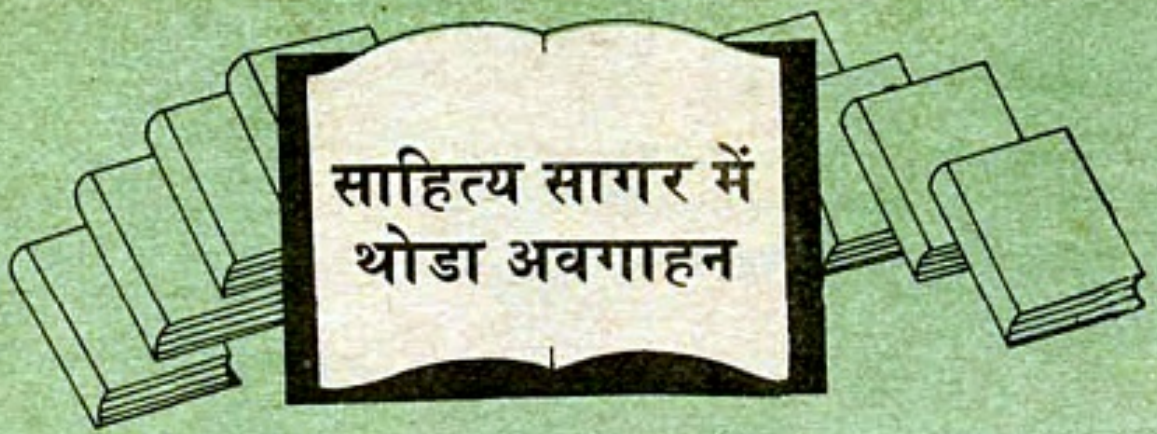
१. जैसे कि हम को मालूम है, महाभारत का निवेदक कौन है?

२. वह यह निवेदन कौनसे स्थान पर करता है?

३. किस मौके पर यह निवेदन किया गया ?

४. यह महाकाव्य उसने किस से सुना था?

५. आज हम को प्राप्त महाभारत में कितने श्लोक हैं?

६. मूलतः उस में कितने श्लोक थे?

७. महाभारत-युद्ध की कालावधि क्या है?

८. दुनिया का सब से लम्बा महाकाव्य कौनसा है?

९. पहले पहल उसको लिखने का काम किसने किया?

१०. व्यास का पूरा नाम क्या है?

(पृष्ठ ८ देखिये)

सभी भारतीय भाषाओं का एक शब्द सीखें ।

संस्कृतः *प्राची*, मराठी, गुजराती, बंगला, आसामी और ओरिया: *पश्चिम*; कन्नडः *पसेमिहा*; पंजाबी: *पछम्*; उर्दू और काश्मिरी: *मग़रिब*; सिन्धीः *औलहु*; तेलुगु: *पड्मरा*; तमिल: *मेरुक्कु*; मलयालमः *पतियारु* ।

आप को विश्वास है?

* कि सभी जाति के कुत्ते भोंक सकते हैं?
* कि लहसन का प्याज़ से कोई रिश्ता है?
* कि घोड़े हमेशा आज के जितने ही बड़े रहे हैं?

नहीं, नहीं!

* पश्चिम आफ्रिका का कॉंगो बुश डॉग भोंक नहीं सकता ।
* लहसन का लिली-परिवार से रिश्ता है ।
* प्रागैतिहासिक काल का उत्तर अमेरिका का घोड़ा करीब करीब कुत्ते के आकार का हुआ करता था ।

उत्तरावलि

वह कौन?

नचिकेत ।

इतिहास

१. अकबर ।
२. दीन-ए-इलाही ।
३. दैवी विश्वास ।
४. गोरा और बादल ।
५. राणी पद्मिनी ।
६. मेवाड़ ।
७. इन्द्रप्रस्थ ।
८. खाण्डव वन । वह एक जंगल था ।
९. हस्तिनापुर ।
१०. दिल्ली शहर के नज़दीक ।

विज्ञान

१. अरेबिक ।
२. लुई फिलिप (१७७३-१८५०) फ्रेन्च राज्यक्रान्ति के समय स्वित्सर्लण्ड भाग गया । वहाँ कोई झूठा नाम धारण कर के वह किसी स्कूल में गणित सिखाता था ।
३. आस्ट्रेलिया का कोआला ।
४. कैरो के पास का चिआप्स का विशाल पिरामिड ।
५. जर्मनी के लबेक का ख्रिस्तियन फेड्रिक हेनेकन ।
६. कॅरोलिना के किनारे पाई जानेवाली वीनस फ्लाय ट्रॅप वनस्पति । उसके पत्तों के चंगुल में आनेवाला कोई भी छोटा जीव छूट नहीं पाता ।
७. तीन इंच से कम, मगर उसकी अपनी लंबाई के बारह हज़ार गुना लंबा ।
८. मास्को में क्रेम्लिन के पास । वह १९ फुट ऊँचा है और उसका वज़न १९८ टन है । मगर उसे न कभी कहीं टाँगा गया न बजाया ही गया ।
९. फल्कॉन । उनमें से कुछ १५० वर्ष तक भी जीते हैं ।
१०. ४०,०००,००० डिग्री फॅरनहाईट ।

साहित्य

१. सौति ऋषि ।
२. शौनक ऋषि के नैमिषारण्य स्थित आश्रम में ।
३. शौनक ऋषि के किये यज्ञ के उपसंहार के समय ।
४. वैशंपायन ऋषि से ।
५. एक लाख ।
६. चौबीस हज़ार ।
७. अठारह दिन ।
८. महाभारत । वह होमर के इलियड और ओडिसी को मिलाकर भी उससे आठ गुना बड़ा है ।
९. मूल लेखक व्यास के कहने पर गणेश ने ।
१०. कृष्ण द्वैपायन व्यास ।

नेहरू की कहानी
६

सन १९२० में काँग्रेस महासभा का आधिवेशन कलकत्ते में हुआ । उन्हीं दिनों लाला लजपत राय अमेरिका में काफ़ी समय बिताकर अपनी मातृभूमि को लौटे थे । इस अधिवेशन की उन्होंने अध्यक्षता की ।

महात्मा गांधीजी ने अपनी राय ज़ाहिर की कि ब्रिटिश सरकार के साथ काँग्रेस सब प्रकार से असहयोग करें । पर अनेक नेताओं को गांधीजी की यह नीति पसंद न थी । केवल मोतीलाल नेहरू ने गांधीजी के विचारों का समर्थन किया ।

काँग्रेस के स्वरूप के संबंध में तेज़ी से परिवर्तन होने लगे । अब काँग्रेस केवल उच्च-वर्गियों की संस्था नहीं रही, मध्य-वर्ग और निम्न-वर्गों के प्रतिनिधि भी खादी धारण कर कांग्रेस के सदस्य बनने लगे । इन सब ने असहयोग आंदोलन के लिए अपनी स्वीकृति दे दी ।

इस प्रकार कौंग्रेस में जो नये परिवर्तन आ रहे थे उनको पसंद न करनेवालों में एक थे महम्मद अली ज़िन्ना । क्यों कि कौंग्रेस में जो नई चेतना जागृत हो रही थी, वह उनके स्वभाव के अनुकूल न थी ।

कौंग्रेस सभा का आधिवेशन समाप्त होने पर जवारलालजी गांधीजी को शांतिनिकेतन में ले गये । गांधीजी और रवीन्द्रनाथ ठाकूर के बीच जो विचार-विनिमय हुआ, वह एक अविस्मरणीय घटना थी । गांधीजी ने रवीन्द्रजी को 'ज्येष्ठ भ्राता' (बोडो दादा) नाम से संबोधित किया ।

असहयोग आंदोलन देश के चारों तरफ़ फैल गया । दूसरे ही महीने में (दिसंबर १९२१ और जनवरी १९२२) लगभग ३०,००० लोगों को जेलों में बन्द किया गया । जवाहरलाल को भी कैद किया गया । उनका जेल-जीवन का यही प्रथम अनुभव था ।

इसी समय इंग्लैंड के राजकुमार बेट्स् भारत के भ्रमण के लिए पधारे । कॉंग्रेस ने प्रस्ताव पास किया कि युवराज के सारे कार्यक्रमों का बहिष्कार किया जाए और इस लिए जनता से सहयोग का आव्हान किया । इसका परिणाम यह हुआ कि जब मुंबई, कलकत्ता जैसे शहरों में जब राजकुमार का जुलूस निकला तब वहाँ के सारे मार्ग वीरान दिखाई दिये ।

उसी समय पुलिस के अत्याचारों से क्रोधित हुए कुछ लोगों ने चौरी चौरा गाँव के पुलिस थाने को आग लगा दी । उस आग की लपटों में पुलिस के कुछ सिपाही मर गये । गांधीजी किसी प्रकार की हिंसा को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, इस लिए उन्होंने इस हिंसा-कांड को देख कर राष्ट्रीय आंदोलन को रोकने का आदेश दे दिया ।

किसी एक स्थान पर हिंसात्मक घटना हुई इस लिए समूचे राष्ट्रीय आंदोलन को स्थगित करना जवाहरलाल को पसंद नहीं था । और कुछ नेताओं ने भी गांधीजी की इस नीति का विरोध किया । कुछ दिनों बाद गांधीजी भी कैद किए गये ।

जवाहरलाल को लगातार दो बार जेल में रखा गया । सन १९२३ में जवाहरलाल की दृष्टि इस ओर आकृष्ट हुई कि हमारे देश के विभिन्न भागों में कानून किस प्रकार अमल हो रहा है । पंजाब में ब्रिटिशों ने महाराजा नाभा को उनकी राजगद्दी से हटा दिया । एक आइ.सी.एस अधिकारी को उस प्रदेश के राज्य-संचालन की ज़िम्मेदारी सौंप दी गई ।

इसका विरोध करनेके लिए कुछ सिख लोग अपने धार्मिक संप्रदाय की रक्षा के लिए जैटो पहुँच गये । पुलिस ने उनको रोका और उन पर लाठियाँ चलाईं । तब जवाहरलालजी अपने मित्र के. संतानम् और गिडवानी को साथ लेकर वहाँ की हालत को अपनी आँखों देखने के लिए वहाँ पहुँचे ।

वहाँ जवाहरलाल तथा संतानम् के हाथों में हथकड़ियाँ पहनाकर उन्हें ब्रिटिश अधिकारी शहर की गलियों में पैदल चलाते हुए ले गये । जेल की अंधेरी कोठी में दोनों ने हथकड़ियों के साथ पूरी रात बिताई । उस अंधकार में एक चूहे ने जवाहरलाल की नाक को घायल कर दिया ।

(क्रमशः)

राजकुमारी का निर्णय

शिवकाशी नाम के गाँव में एक किसान रहा करता था, जिसका नाम था गोपीनाथ । गोपीनाथ के तीन बेटे थे– राजनाथ, भीमनाथ और सोमनाथ । गोपीनाथ यह बिल्कुल नहीं चाहता था कि उसके बेटे भी साधारण किसान बनकर दरिद्रावस्था में जीवन-यापन करें । इसलिए उसने एक दिन तीनों पुत्रों को बुलाकर प्रत्येक के हाथ में सौ सौ सोने के सिक्के दिये और कहा– "तुम लोग शहर में जाकर चाहे व्यापार करो या कोई अन्य कार्य करो । अब आगे धन करना तुम्हारा काम । इतने दिन तुम्हें खिला-पिलाकर मैंने छोटे का बडा किया । अब तुम सयाने हो गये हो, तुम्हारे पास बुध्दि है । अब तुम खुद परिश्रम करके धन कमाओ और अपने बलबूते पर खड़े रहो । स्वावलंबन का आनन्द अपूर्व होता है !"

तीनों बेटे छः महीनों के बाद अपने गाँव लौट आये । गोपीनाथ ने सोचा कि उसके पुत्र खूब धन कमाके आये होंगे । बडे बेटे राजनाथ से उसने पूछा–"बेटा, तुमने कितना धन कमाया? कौनसा व्यापार किया?"

राजनाथ ने अपनी थैली से एक आईना निकालते हुए कहा–"पिताजी, बड़ी मेहनत के बाद मैं इसे प्राप्त कर सका हूँ । यह कोई मामूली आईना नहीं है । इसकी मदद से जाना जा सकता है कि दुनिया में कहाँ क्या हो रहा है? पर उसके लिए आवश्यक शक्ति केवल मेरे ही पास है ।?"

गोपीनाथ ने अपने दूसरा पुत्र भीमनाथ से वही सवाल पूछा, अपनी बग़ल में खड़े पंचकल्याणी घोड़े को दिखाते हुए भीमनाथ ने कहा–"बाबूजी, मैंने यह घोड़ा प्राप्त कर लिया है । यों मत समझिए कि यह कोई

रजनी पांडे

साधारण घोड़ा है । मैं जहाँ भी जाना चाहूँ, वहाँ यह पल भर में मुझे पहुँचा देता है । यह न केवल ज़मीन पर चलता है, बल्कि पानी पर दौड़ता है और आसमान में भी उड़ सकता है । पर यह केवल मेरे आदेश पर ही चल सकता है ।''

तीसरे पुत्र सोमनाथ ने अपनी उंगली में पहनी अंगूठी पिता को दिखा दी । वह किसी नक्षत्र के समान चमक रही थी । सोमनाथ ने पिता से कहा—''बाबूजी, इस अंगूठी में एक अजब ताक़त है । यह अंगूठी मुझे दूसरों की आँखों से ओझल रखकर जहाँ मैं जाना चाहूँ, ले जा सकती है ।''

गोपीनाथ के पुत्र अद्भुत शक्तियों वाली चीज़ें ले आये ज़रूर, पर उसकी समझ में नहीं आया कि आखिर इनकी उपयोगिता क्या है । रोज़मर्रा की ज़रूरतें पूरा करने के लिए यह दपर्ण, यह घोड़ा और यह अंगुठी क्या काम आएगी? धन कमाने का काम इन अद्भुत चीज़ें की सहायता से तो होगा नहीं । इस संबंध में गोपीनाथ अपने पुत्रों से बातचीत कर ही रहा था कि राजभटों ने गाँव में आकर ढिंढ़ोरा पिटवाया ।

ढ़िंढोरा था—''वसंतसेना उस देश के राजा की इकलौती बेटी है । वह परम सुंदरी है । राज्य की वारिस वही है । कुछ दिन पहले एक दुष्ट मांत्रिक उसे उठा ले गया है । जो कोई उसका पता लगाकर राजकुमारी को उसके चंगुल से छुड़ा लाएगा, न केवल राजकुमारी का उसके साथ विवाह होगा, बल्कि राज-पद भी उसको मिलेगा ।''

यह ढिंढ़ेरा सुन कर गोपीनाथ के पुत्रों को लगा कि अपनी अद्भुत शक्तियों की मदद से राजकुमारी की रक्षा की जा सकती है ।

अपने आईने की मदद से राजनाथ ने इस बात का पता लगाया कि मांत्रिक ने राजकुमारी को कहाँ छिपा रखा है । मांत्रिक ने राजकुमारी को सुदूर समुद्र में एक टापू पर एक घर में छिपाया है । यमकिंकर जैसे शस्त्रधारी सैनिक वहाँ पहरा दे रहे हैं ।

भीमनाथ ने छोटे भाई को अपने घोड़े पर बिठाया और दोनों मिलकर उस टापूवाले घर से थोड़ी दूरी पर उत्तर पड़े । अपनी अँगूठी के प्रभाव से सोमनाथ ने अदृश्य रूप

में बन्दी राजकुमारी के कक्ष में प्रवेश किया । मंत्र-दण्ड को हवा में फहराते हुए राजकुमारी को धमकानेवाले मांत्रिक के पास वह पहुँचा और अपनी तलवार के एक ही वार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया ।

अब सोमनाथ राजकुमारी को साथ लिये घोड़े के पास पहुँचा । फिर तीनों उस पर सवार हो आकाश-मार्ग से कुछ ही क्षणों में उनके घर के सामने उतर पड़े ।

अपने पुत्रों की अद्भुत शक्तियाँ देखकर गोपीनाथ अत्यन्त प्रसन्न हुआ । पर अपने बेटों की खुशी देख कर उसके मन में शंका हुई—उसका प्रत्येक पुत्र राजकुमारी के साथ विवाह करके कहीं उस देश का राजा बनने की बात तो नहीं सोच रहा है?

अतः गोपीनाथ ने अपने तीनों पुत्रों को बुलाकर पूछा—"तुम तीनों में कौन राजकुमारी से शादी करके इस देश का राजा बनने योग्य है?"

तीनों ने एक-दूसरे की ओर देखा ज़रूर, पर किसी ने पिता के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया ।

गोपीनाथ ने समझ लिया कि उसके हर पुत्र में स्वार्थ और प्रलोभन घर किये हुए हैं । उसने अपने पुत्रों से कहा—"बेटों, तुम तीनों ने मिल कर राजकुमारी को मांत्रिक के चंगुल से मुक्त कर उसकी रक्षा की है अवश्य! इस कार्य-सिध्दि के बाद तुम्हारे दिलों में राजकुमारी से विवाह करके इस देश का राजा बनने का मोह होना स्वाभाविक है । जब राजा तुम से पूछेंगे कि तुम में से मैं किस के साथ राजकुमारी का विवाह

संपन्न करूँ तो शायद तुम तीनों अपने को योग्य बताकर आपस में लड़ पड़ोगे! यों एक ख़तरा पैदा हो सकता है। इससे जो सिध्दि तुम ने प्राप्त कर ली है वह निरर्थक साबित होगी।"

पिता की बातें तीनों पुत्रों को ठीक ही जँची। उन्होंने पिता से पूछा—"पिताजी, आप ही बताइए कि हम तीनों में से कौन राजकुमारी के लिए अधिक योग्य है?"

गोपीनाथ ने हँसते हुए कहा—"निर्णय करने की ज़िम्मेदारी मेरी नहीं है। किसी भी विवाह के लिए वरवधू की स्वीकृति की आवश्यकता होती है। इस लिए तुम लोग जाकर राजकुमारी को राजा के हाथ सौंप दो। राजकुमारी स्वयं निर्णय करेगी कि वह किसको वरण करे।"

तीनों भाई राजकुमारी को राजा के पास ले गये। राजा को सारा वृत्तांत सुनाया।

राजा ने अपनी पुत्री से पूछा—"बेटी, इन तीनों में से तुम किस के साथ विवाह करना चाहोगी?"

राजकुमारी कुछ समय तक सोचती रही। फिर उसने कहा—"पिताजी, इन तीनों में से ज्येष्ठ राजनाथ है। इस लिए सब से पहले उसका विवाह होना उचित है। इसके अलावा यह बात भी सोचनी चाहिए कि उसके अद्भुत शक्तिवाले दर्पण के कारण ही पता चला कि मैं किस स्थान पर बन्दिनी हूँ? अगर मेरा पता मालूम न होता, तो बाकी दोनों भाइयों की सिध्दियाँ व्यर्थ सिध्द होतीं। इस लिए मैं राजनाथ से विवाह करना चाहती हूँ। साथ ही भीमनाथ को प्रधान सेनापति और सोमनाथ को मुख्य मंत्री के पद पर नियुक्त किया जाए तो राज्य की सारी समस्याएँ हल करने में मदद होगी और तीनों के प्रति उचित न्याय होगा!"

राजकुमारी के निर्णय को सुनकर तीनों भाइयों को बड़ा संतोष हुआ। राजा ने बड़े ठाठ-बाट से राजकुमारी का विवाह राजनाथ के साथ संपन्न किया। और राज्य का सारा दायित्व उसको सौंप दिया। फिर भीमनाथ को प्रधान सेनापति का पद दिया गया और सोमनाथ को मुख्य मंत्री बना दिया गया।

श्रीकृष्ण द्वारा प्रारंभ किया यज्ञ पूरा हुआ । कई हज़ार ब्राह्मणों को भोजन दिया गया । भोजन में तरह तरह के स्वादिष्ट पकवान बनाये गये । सर्वत्र घी की खुशबू बिखर रही थी । ऐसा सुस्वादु भोजन करके सभी अतीव प्रसन्न हो गये । सब ने भोजन की भूरी भूरी प्रशंसा की । अर्जुन, सात्यकी आदि पचास लोगों के साथ बैठकर श्रीकृष्ण ने भी भोजन किया । इसके बाद सब सभाभवन में पहुँचकर बातें करने लगे । अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा, "हमें इस बात का कोई पता ही नहीं चला कि आगे चलकर उन ब्राह्मण पुत्रों का क्या हाल हुआ? उन्हें कौन उठा ले गये थे? उनको कहाँ छिपा रखा गया था? आपने कहा था कि वह सब कुछ ठीक समय पर आप बता देंगे । क्या अभी वह उचित समय है?"

"इस पूरी सृष्टि के सृजनकर्ता परमेश्वर मुझे देखना चाहते थे । उन्हें मालूम है कि मैं ब्राह्मणों के कार्य में उपेक्षा नहीं दिखाता । इसी विचार से वे एक एक ब्राह्मण पुत्र को गायब करते गये । मैंने भी उनकी इच्छा को पूर्ण करने के विचार से समुद्र को अलग अलग शाखाओं में चीर कर और पहाड़ों को ढ़केलते हुए रास्ता बनाया और आगे बढ़ा । वे सब दृश्य तो तुमने अपनी आँखों से देखे हैं ।" श्रीकृष्ण ने जवाब में कहा ।

इसके बाद अर्जुन लौट गया । उसने जो जो अद्भुत देखे थे, उनका सविस्तार वर्णन युधिष्ठिर को सुनाया । युधिष्ठिर यह सब सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए । उन्होंने कहा— "अर्जुन, ब्राह्मण की मदद करने के लिए तो

२२. कृष्ण की कैलास यात्रा

तुम भी गये थे । पर तुम्हें सफलता न मिली । ऐसे मुश्किल काम तो श्रीकृष्ण ही कर सकते हैं । फिर भी श्रीकृष्ण की मदद करने के इरादे से तुम ने प्रस्ताव रखा और स्वीकृत कार्य को सिद्ध करने की कोशिश की इसलिए मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ । पराक्रमी मनुष्य को नये नये आव्हानों का स्वीकार करना चाहिए । सफलता मिले या न मिले— दूसरी बात है ?"

एक दिन रुक्मिणी ने श्रीकृष्ण से कहा, "मैं ने प्रद्युम्न को जन्म दिया है, लेकिन और अधिक सन्तान पाने की मेरी इच्छा है । आप जैसा योग्य पत्र मुझे चाहिये । क्या आप मेरी इस इच्छा की पूर्ति नहीं करेंगे ?"

"मैं भगवान शंकर की आराधना करके तुम्हें एक पुत्र प्रदान करूँगा । तपस्या के द्वारा असंभव कार्य भी संभव हो जाता है । हिमालय में जाकर महादेव को मैं प्रणाम करूँगा । बदरीवन में तप करनेवाले तपस्वियों को भी रास्ते में मैं देखना चाहता हूँ । इस यात्रा से अनेक शुभ लाभ होंगे । मैं ज़रूर कैलास की यात्रा करूँगा । तब तक तुम यहीं रहो । तुम्हारी इच्छा ज़रूर पूर्ण होकर रहेगी । इसके पहले मुझे अपने शेष काम पूर्ण करने दो ।" श्रीकृष्ण ने कहा ।

दूसरे दिन प्रातःकृत्यों से निबटकर श्रीकृष्ण ने बलराम, सात्यकी, उग्रसेन, कृतवर्मा, उद्धव तथा अन्य सभी प्रमुख व्यक्तियों के पास सन्देश भिजवाया, कि वे सभाभवन में उपस्थित हो जाएँ । थोड़ी ही देर में सब सभाभवन में उपस्थित हुए । सब को संबोधित कर कृष्ण ने कहा:—

"अपने प्रायः सभी शत्रुओं का मैं ने संहार किया है । फिर भी और एक व्यक्ति बचा हुआ है । वह साधारण व्यक्ति नहीं है; अत्यन्त पराक्रमी और साहसी है वह । उसका नाम है पौण्ड्र । मैं उससे डरता नहीं हूँ । उसका संहार करने पर ही मेरी सच्ची विजय मानी जाएगी । मगर मुझे इस समय कैलास-यात्रा के लिये जाना है । मेरी अनुपस्थिति में पौण्ड्र हमारी नगरी पर ज़रूर हमला करेगा । विश्वभर के यादवों का संहार करने की शक्ति उसमें है । इसलिए मेरे लौटने तक आप लोगों को बड़ी सतर्कता के साथ दिन-रात इस नगरी की रक्षा करनी

होगी। नगर के सभी द्वारों की कड़ी सुरक्षा रखिये। बिना अनुमति किसी को भी न बाहर जाने दिया जाय, न अन्दर आने दिया जाय। चतुरंग सेना सुसज्ज रखिये। अस्त्र-शस्त्रों का खूब संग्रह किया जाय। अष्ट दिशाओं की काफ़ी निगरानी रखी जाय। मुझे आशा है कि जो उत्तरदायित्व मैं तुम पर सौंप रहा हूँ, उसे तुम खूब निभाओगे। आज तक कई बार युद्ध तुमने किये ही हैं, इस बार तुम्हारी सच्ची परीक्षा है। मन में किसी प्रकार का भय न रखना। मैं यथासंभव शीघ्र लौटने की कोशिश करूँगा।"

इसके बाद सात्यकी को लक्ष्य कर उन्हों ने कहा, "सुनो, इस नगर-सुरक्षा का भार मैं तुम पर सौंप रहा हूँ। यादव वंश की सारी संपदा का रक्षक मैं तुम्हीं को नियुक्त कर रहा हूँ।"

"आप की आज्ञा और बलराम का सहयोग यदि मुझे प्राप्त है, तो ऐसा कोई कार्य न होगा जिसे मैं पूरा न कर सकूँ। एक पौण्ड्र ही क्या, खुद इन्द्र भी सारे दिक्पालों और समस्त देवताओं को साथ लेकर हमारे नगर पर आक्रमण करने आयें, तो भी मैं उनकी परवाह नहीं करूँगा।" सात्यकी ने इत्मीनान से कहा।

बाद में कृष्ण ने उद्धव से कहा, "गुरुवर, आप बुद्धि में बृहस्पति के समान हैं। आप से मैं क्या कहूँ? आप अपने बुद्धिबल से हमारे सारे यादव वीरों का संचालन कीजिये। यह दायित्व मैं आप को सौंप रहा हूँ। इसी प्रकार
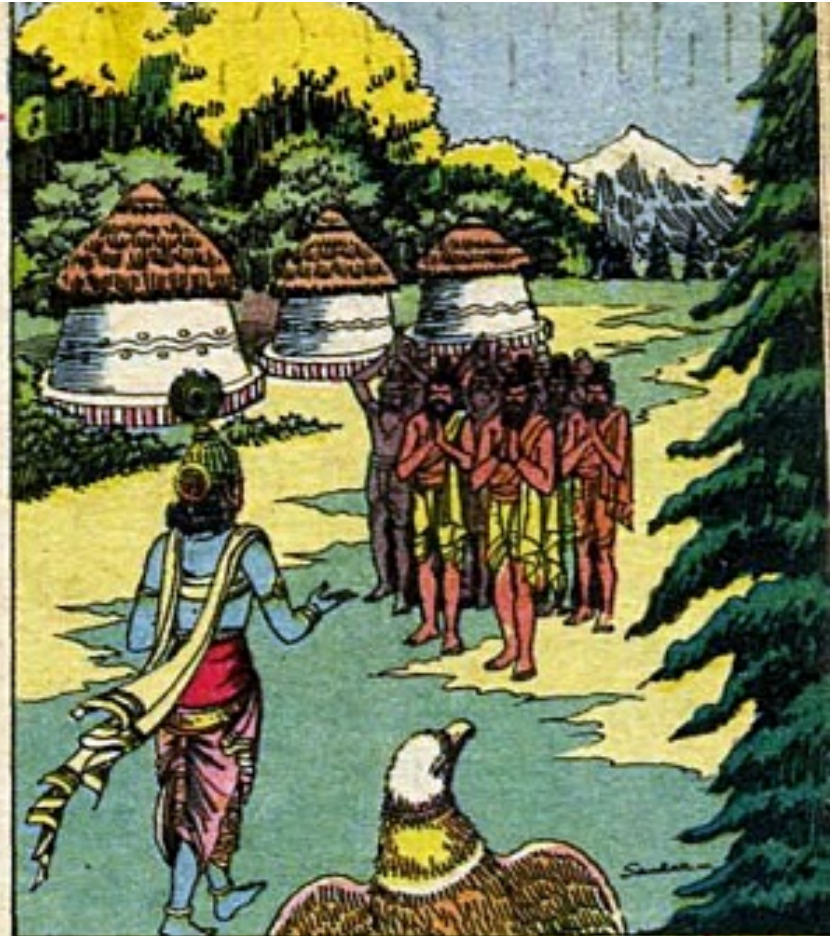
बलराम, उग्रसेन तथा अन्य प्रमुख यादवों को सावधान करके श्रीकृष्ण ने गरुड का स्मरण किया। तत्काल गरुड आकर कृष्ण के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा। कृष्ण ने बताया कि उन्हें कैलास जाना है, और वे गरुड की पीठ पर सवार हुए। गरुड आसमान में उड़कर ईशान्य की ओर रवाना हुआ। गरुड़ ने पूछा— "महाराज, कहाँ जाने की आज्ञा है? सीधे कैलास जाना है कि बीच में और कहीं रुकना है?"

श्रीकृष्ण ने कहा— "बदरीवन के मुनियों का समाचार जानना है। एक बार बड़ी त्रस्त अवस्था में वे द्वारका आये थे। उनके प्रथम दर्शन करके फिर कैलास की ओर बढ़ेंगे।"

मार्गमध्य में श्रीकृष्ण बदरीवन में उतरे।

वहाँ मुनियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। कृष्ण ने उनका आतिथ्य ग्रहण कर रात वहीं बितायी। अर्ध रात्रि के समय कृष्ण के मन में उस प्रदेश में संचार करने की इच्छा हुई। बड़ी देर तक वहाँ संचार करने पर वे एक मनोहर प्रदेश में पहुँचे। वहाँ स्वस्तिकासन लगा कर वे समाधि स्थिति में पहुँचे।

उस समय मृगों का पीछा करते हुए हज़ारों पिशाच वहाँ आ निकले। उनके नेता थे घंटाकर्ण नामक राक्षस और उसका छोटा भाई। वे कृष्ण के समीप पहुँचे। उन्होंने पूछा, "महाराज, आप कौन हैं? देखने में तो आप बहुत सुकुमार लगते हैं। इस वन में आप क्यों रह रहे हैं? कौन हैं आप? कोई राक्षस, या देवता? आप कोई भी हो, क्या मेरे लायक कोई सेवा है? क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ। आपकी सेवा का अवसर पाकर कृतार्थ हो जाऊँगा।"

"मैं पदुवंशी क्षत्रिय हूँ। मेरा काम है—दुष्टों का संहार करना और सज्जनों को प्रसन्न करना। शंकरजी के दर्शनार्थ मैं कैलास जा रहा हूँ। मगर यह बताओ, तुम कौन हो? यह प्रदेश तो साधुओं का निवासस्थान है। यहाँ मृगों की हिंसा वर्जित है। मगर तुम लोग तो मृगों का शिकार करने यहाँ पहुँचे हो। ऐसेमें मैं तुम लोगों को क्षमा नहीं कर सकता।" श्रीकृष्ण ने कहा।

घंटाकर्ण ने अपना परिचय दिया, "मेरा नाम है घंटाकर्ण और यह है मेरा छोटा भाई। यह सारी मेरी सेना है। मैं एक विष्णुभक्त हूँ। उनकी पूजा के लिये ही मैं शिकार कर रहा हूँ; इसलिये मेरे इस कार्य को 'हिंसा' नहीं
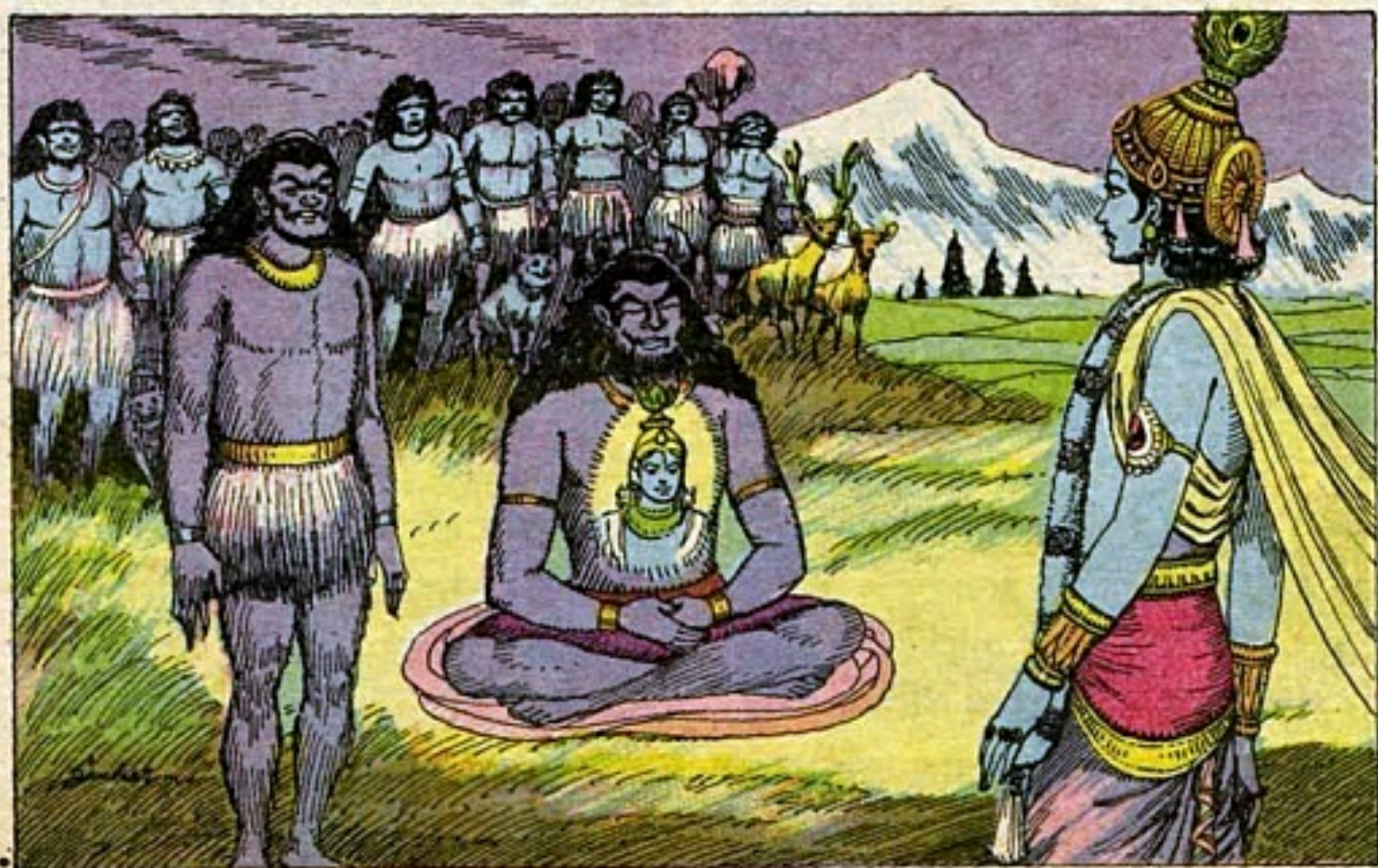
कहना चाहिये। और एक बात सुन लीजिये — मेरे इष्ट देवता इस समय वसुदेव के पुत्र के रूप में जन्म धारण कर द्वारका में निवास कर रहे हैं। मैं अभी उनके दर्शन के लिये ही सेनासहित जा रहा हूँ।"

यह बोलते हुए वह कृष्ण के पास ही बैठ गया और हाथ जोड़कर अपने आराध्य देव का ध्यान करने लगा। उसको देखकर कृष्ण को बड़ा आनंद आया। वह तो खुद अपना ही भक्त है, मगर उसके कार्य पिशाचों के हैं। आखें बन्द कर ध्यान में मग्न घण्टाकर्ण के मनोनेत्रों के सामने कृष्ण ने अपना स्वरूप दर्शाया। उसने जब आँखें खोलकर देखा, तब उसने अपने सामने वही रूप देखा। वह उठ खड़ा हुआ और आनन्द विभोर हो नाचते हुए चिल्ला उठा, "मैं ने कृष्ण को देखा है, विष्णु के दर्शन किये हैं।" साथ ही उसने अनेक प्रकार से कृष्ण का स्तोत्र पाठ किया। इसके बाद अपने शूल में चुभा रखे एक शव को निकाल कर उसने उसके दो टुकड़े किये और कहा, "यह एक पवित्र ब्राह्मण का शव है। इसे मैं भक्तिपूर्वक समर्पित कर रहा हूँ। ग्रहण कीजिये।"

कृष्ण के मन में घण्टाकर्ण के प्रति दयाभाव उत्पन्न हुआ। उन्होंने उसे समझाया, "सुनो, वत्स, मुझ जैसे लोग शवों को स्पर्श भी नहीं करते। ऐसी पूजा से मुझे घृणा है। साधारण पिशाचों द्वारा किये जानेवाले ऐसे कार्य तुम्हारे जैसे मेरे भक्त को शोभा नहीं देते। तुम सदा मेरा स्मरण करते हो, इसलिये मैं तुम्हें उत्तम लोक प्रदान करूँगा। यह हिंसा का काम छोड़ दो। एक उत्तम व्यक्ति को

शोभा दे ऐसे कार्य करते रहो। किसी की हत्या करना कभी अच्छा काम नहीं होता। पुण्य-कर्म करते रहो।" यह कहकर कृष्ण ने उसके शरीर को स्पर्श किया। जिस प्रकार पारस के स्पर्शमात्र से लोहा सोने में परिवर्तित होता है, उसी प्रकार वह भयंकर पिशाच घण्टाकर्ण एक दिव्य पुरुष के रूप में परिवर्तित हो गया।

शीघ्र ही रात बीत गयी, सूर्योदय हुआ। कृष्ण ने गंगास्नान किया और बदरीवन के मुनियों से बिदा लेकर गरुड पर आरूढ़ हो वे कैलास की ओर निकल पड़े। कैलास के समीप पहुँचते हुए कृष्ण ने उस पर्वत पर अनेक दृश्य देखे। शिवजी के कार्यों का स्मरण करते हुए उन्होंने आनन्द प्राप्त किया।

थोड़ी देर बाद वह मानसरोवर के उत्तरी तटपर उतर गये, वहाँ के मुनियों का परिचय प्राप्त किया और बारह साल पर्यंत तप करने के लिये तैयार हो गये। उन्होंने फागुन मास के प्रारंभ में दीक्षा ग्रहण की और कन्दमूलों का सेवन करते हुए बारह वर्ष तप किया। बारह साल जब पूरे हुए, तब अन्तिम दिन इन्द्र तथा अन्य देवता कृष्ण को देखने आये। उनकी समझ में यह बात न आ रही थी, कि किस उद्देश्य से कृष्ण ने यह दीर्घ तपाचरण किया।

दूसरे दिन स्वयं शिवजी पार्वतीसहित अपने वृषभ वाहन पर सवार होकर कृष्ण से मिलने आये। उनके साथ पुष्पक पर कुबेर तथा विघ्नेश्वर व कुमार स्वामी अपने अपने वाहनों पर चल रहे थे। उनके पीछे भूत गण चले आये। वे सब नाचते, गाते चल रहे थे।

कृष्ण को दूर से ही देखकर शिवपार्वती वृषभ वाहन से उतर पड़े। कृष्ण भी शिव को देख अपने आसन से उतर पड़े, आगे होकर आदर से झुककर प्रणाम करके उनके सामने खड़े हो गये। उस समय वहाँ पहुँचे हुए समस्त देवताओं ने शिव-केशव को एक साथ देखकर अपने अपने जन्म को धन्य माना।

इसके उपरान्त कृष्ण ने शिव को साष्टांग प्रणाम करके उनका यशोगान किया। इसपर शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कृष्ण का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा।

"कृष्ण, इसके पूर्व ही आपने अपनी तपोसिद्धि द्वारा वरदान के रूप में मुझ से एक

पुत्र को प्राप्त किया है । इस के पूर्व मैंने कृतयुग में किसी संकल्प से प्रेरित होकर सैकड़ों वर्षों तक अत्यन्त निष्ठापूर्वक तपस्या की थी । उस समय मेरी परिचर्या करने के लिये हिमवान ने अपनी उपवर कन्या और उसकी सखियों को मुझे समर्पित किया था । मैंने भी उन्हें स्वीकार किया था । उस संदर्भ में हम दोनों को मिलाने के विचार से इन्द्र ने कामदेव को प्रेरित किया था । कामदेव ने समाधि से बाहर निकलने तक मेरी प्रतीक्षा की और मेरे हृदय पर सम्मोहनास्त्र का प्रयोग किया । तत्काल मेरे मन में विचार पैदा हुआ कि ऐसे दुष्ट का वध करना चहिये; और अपने आप मेरे भालनेत्र से अग्नि उत्पन्न हुई । तभी आकाशस्थ देवता चिल्लाने लगे, "आप कृपा करके कामदेव को दण्ड न दीजिये, उनपर क्रोध न करे ।" इस बीच ज्वालाओं ने कामदेव को घेर लिया और उसको भस्म कर डाला । इसके बाद ब्रह्मा आदि देवता आ पहुँचे और उन्होंने बताया कि वह तीनों लोकों का कल्याण करनेवाला है । ब्रह्मा के संकल्प के अनुसार उसको आप के पुत्र के रूप में निर्धारित किया । वही आपका प्रद्युम्न है । आप के और रुक्मिणी की प्रथम सन्तान-वही प्रद्युम्न—आप ने इस समय जो तप किया है उसके फल स्वरूप, पहले से ही आप को प्राप्त है ।"

इसके बाद शिवजी ने वहाँ पहुँचे मुनियों का परामर्श किया और उन्हें बताया कि कृष्ण को ही श्रीमन्नारायण मानकर सभी उनकी पूजा करें ।

उन्होंने मुनियों से कहा— "राक्षसों ने आप लोगों के यज्ञ-कर्म में बाधा डाली, उस समय आप श्रीकृष्ण की शरण में गये । यह आपका निर्णय बहुत ही योग्य था । श्रीकृष्ण शरणागत की रक्षा में नित्य दत्तचित्त रहते हैं । उन्हींके कारण आज बदरीवन में आप सुखपूर्वक निवास कर रहे हैं ।"

बादमें वे खुद अदृश्य हुए । उनके साथ पार्वती, विघ्नेश्वर, कुमारस्वामी, नन्दी और प्रद्युम्न भी अन्तर्धान हुए । तब कृष्ण भी बदरीवन को लौट पड़े ।

सास और बहू

काशीनाथ शिवपुर गाँव का निवासी था। उसकी माली हालत साधारण थी। उसकी माँ दुर्गा और पत्नी जानकी के बीच हमेशा खटपट चलती रहती। जानकी बड़ी हठीली थी और माता दुर्गा हर बात में बहू से स्पर्धा करती थी। एक बार काशीनाथ किसी भयंकर व्याधि का शिकार हो गया और कई दिनों के इलाज़ के बाद किसी तरह स्वस्थ हो गया।

एक दिन खाना परोसते हुए जानकी ने पति से निवेदन किया—"सुनिए जी, हमें बदरीनाथ जाना होगा। आप जब बीमार थे तब मैंने भगवान से मनौती की थी, कि आपके स्वस्थ होने पर हम उनके दर्शन करने जाएँगे।"

"हाँ बेटा, मैंने भी भगवान से मनौती की थी। हम सब एक साथ बदरीनाथ हो आएँगे।" मथे दही में से मक्खन निकालते हुए माँ दुर्गा ने कहा।

वैसे भी काशीनाथ के इलाज़ में काफ़ी रुपये खर्च हो गये थे, अब मनौती की बात सुनकर वह चौंक पड़ा। पर उसको इस बात का संतोष था कि सास-बहू ने अलग अलग मनौती की थी, फिर भी दो अलग अलग मंदिरों में नहीं जाना था; दोनों ने एक ही तीर्थ में जाने की बात कही थी।

काशीनाथ ने अपने एक मित्र से कुछ रुपये उधार लिये और सब लोग तीर्थ-यात्रा पर चल पड़े। घोड़ों पर सवार हो तीनों पहाड़ पर पहुँचे। पहाड़ पर पहुँचने के बाद काशीनाथ की मुसीबतें शुरू हो गईं। जानकी प्रत्येक देवता के सामने रखी हुंडी में डालने के लिए पति से पैसे माँगती गई, काशीनाथ देता गया।

जानकी को ऐसा करते देख माँ दुर्गा भी अपने हिस्से के पैसे काशीनाथ से वसूलने

अमित बांडे

लगी और हुंड़ी में डालने लगी । यह देख काशीनाथ को बड़ा ग़ुस्सा आया । फिर भी भगवान के मंदिर में अपने क्रोध पर उसने नियंत्रण रखा और सास व बहू को पैसा देता गया । तीर्थ-यात्रा पूरी होने पर तीनों घर की ओर चल पड़े ।

माँ दुर्गा ने हाँफते हुए बेटे से कहा—"बेटा, मैं थक गई हूँ । टट्टू का इंतज़ाम नहीं करोगे?"

अपने पाँवों को सहलाते हुए जानकी ने कहा—"अरे बाप रे, मेरे पैर तो चलने से जवाब दे रहे हैं !"

अब काशीनाथ अपने क्रोध पर नियंत्रण नहीं रख सका । झल्ला कर कह उठा—"वाह खूब ! बाजे-वाद्यों की ज़रूरत नहीं है सास-बहू को? तुम दोनों ने मिलकर सारे पैसे हुंड़ियों में स्वाहा कर दिये ! अब मेरे पास एक कौड़ी तक नहीं बची है । अब तुम्हें पैदल ही उतरना पड़ेगा पहाड़ों से ! समझी?"

"बेटा, यह तुम भला क्या कह रहे हो? यह बात तुम पहले ही बता देते !" माँ ने कुछ ग़ुस्से में आकर कहा । जानकी कह उठी—"मैं कहती हूँ, तुम पहले बता देते तो क्या बिगड़ता तुम्हारा?"

काशीनाथ ने सीढ़ियाँ उतरते उतरते जवाब दिया—"औरतों को इस बात की जानकारी होनी चहिये कि मर्दों की आमदनी कितनी है और खर्च कितना? तुम ज़रा भी नहीं सोचती कि लगातार माँग करती रहो तो आखिर मैं पैसा लाऊँ कहाँ से? एक बात याद रखो-पुण्य कोई ऐसी चीज़ नहीं जो पैसा देकर खरीदी जा सके । सब से बड़ा पुण्य है मन को निर्मल रखना । चलो, जो हो गया सो हो गया । अब पैदल ही चलना पड़ेगा ।"

धीरे धीरे चलते हुए दोपहर तक सब परिवार घर पहुँच गया । काशीनाथ ने कहा—"चलो, जल्दी रसोई बना दो । मैं भूख के मारे परेशान हूँ । मैं ज़रा गाँव में जा कर आता हूँ ।" फिर काशीनाथ बाहर चला गया ।

सास ने बहू को आदेश दिया—"जल्दी रसोई बना देना, मैं तो थक कर चूर-चूर हो गई हूँ ।"

वास्तव में बात यह थी कि सास-बहू ने काम का बँटवारा कर लिया था । सुबह का

खाना बहू बनाती और सास रात का । पर यह समय था दोपहर का । इस लिए अब रसोई बनाने की ज़िम्मेदारी दोनों एक दूसरे पर लाद रही थी । परिणामतः दोनों चुप बैठी रहीं । खाना न सास ने बनाया न बहू ने !

थोड़ी देर बाद काशीनाथ घर लौटा तो उसने देखा रसोई नहीं बनी है । उसने जानकी को डाँटा—"भाई, तुम भी अजीब हो ! बड़ों के साथ स्पर्धा कैसी? मेरे सर पर भूत बन कर बैठी हो तुम !"

फिर काशीनाथ ने माँ से कहा—"माँ, तुम तो बड़ी हो, समझदार हो, छोटों के साथ क्या होड़ करती है? तुम दोनों मिल कर मेरी जान खाने पर तुली हो । छीः !" काशीनाथ ग़ुस्से में आकर घर के बाहर निकल गया ।

जानकी को पति का व्यवहार अपमानजनक मालूम हुआ । बहू के सामने पुत्र ने माँ को झिड़कियाँ दीं, इस लिए दुर्गा भी नाराज़ हुई ।

जानकी रूठकर अपने मायके जाने की तैयारी करने लगी, उसने अपने सारे कपड़े बाँध लिये । अपने दूसरे लड़के के घर जाने के इरादे से दुर्गा ने भी तैयारी कर ली । संयोग था कि दोनों को एक ही शहर जाना था ।

बहू ने सास से कहा—"आप तो इस घर की मालकिन हैं । घर में ताला लगा कर चावी पड़ोसी के पास देने की ज़िम्मेदारी आपकी है ।"

"बड़ा मज़ाक कर रही हो जी । यह घर तो तुम्हारा है । मैं आज हूँ, कल नहीं रहूँगी, घर की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी तो तुम्हारी है । तालाचावी सब तुम जानो ।" सास ने
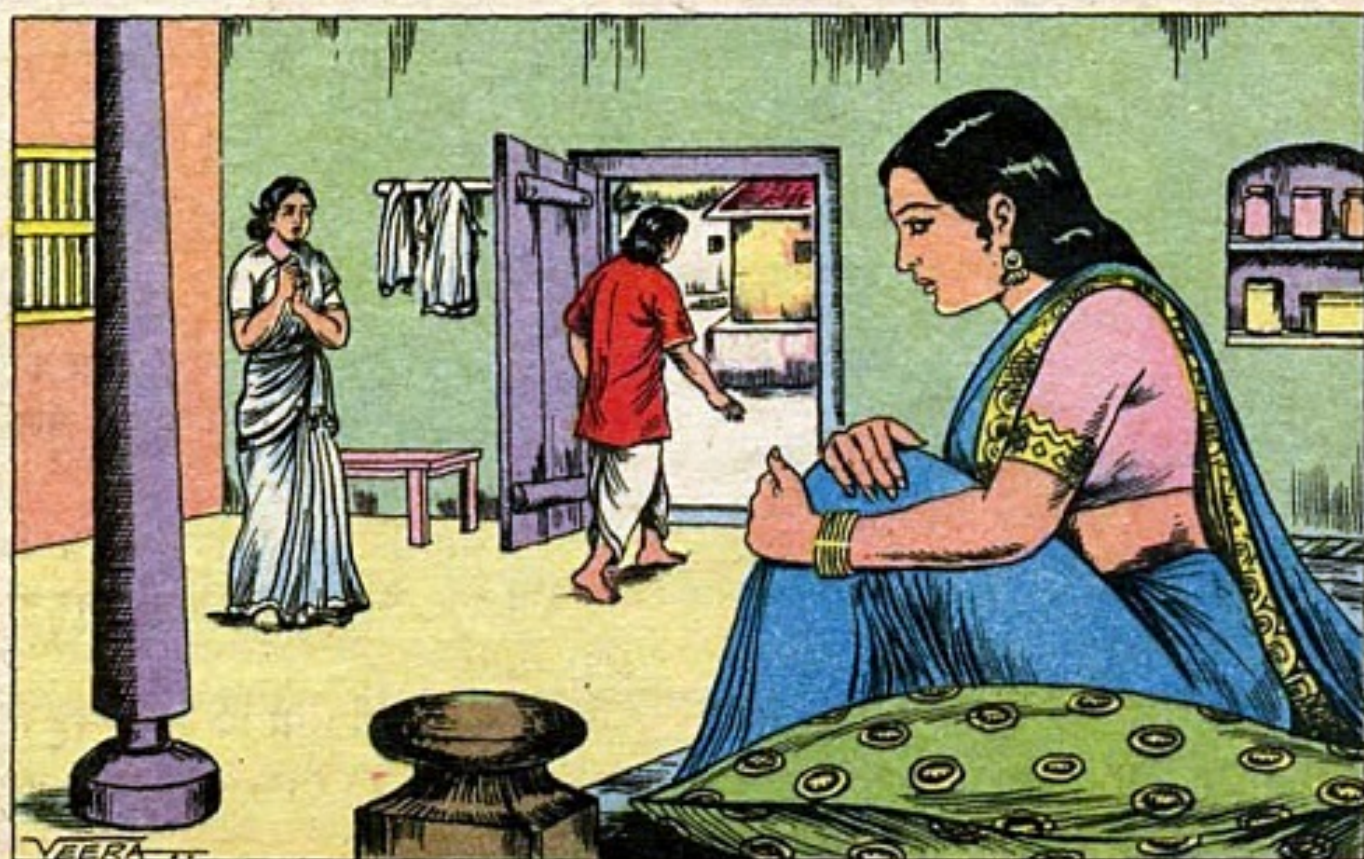
अपने मन की बात कही ।

इसी तरह कुछ सास की कुछ बहू की थोड़ी देर तक चलती रही । आखिर घर में ताला लगाये बिना ही दोनों निकल पड़ी । वे दोनों चौराहे पर पहुँची । कुछ देर इंतज़ार करने के बाद एक ताँगा कहीं से आ निकला । ताँगेवाले ने जान लिया कि दोनों को एक ही गाँव जाना है, उसने उनको ताँगे पर सवार होने के लिए कहा । तांगे में पीछे की तरफ़ सास और बहू अगल-बग़ल में बैठ गईं । जब ताँगा गाँव की सीमा लाँघकर चला तो ताँगेवाले ने प्रार्थना की कि दोनों में से कोई एक आगे आकर बैठ् जाएँ ।

बहू ने कहा—"मैं नहीं बाबा आगे बैठूँगी । आप ही आगे जाकर बैठिये ।"

"मैं यहाँ से ज़रा भी नहीं हिलूँगी, चाहो तो तुम आगे जाकर बैठ जाओ ।" हठ के साथ सास ने कहा ।

दोनों अपनी ज़िद पर अडी रहीं । ताँगेवाले ने सावधान किया, पर व्यर्थ! तेज़ी से दौड़नेवाली गाड़ी सास और बहू के बोझ के कारण पीछे की ओर दब गई और दुर्गा व जानकी दोनों पासवाले पानी के गड्ढे में गिर पड़ीं ।

थोड़ी देर बाद सास और बहू दोनों कराहती हुई गड्ढे से बाहर निकलीं और निकट के एक पेड़ तले एक दूसरे की विरुद्ध दिशा में मुँह करके बैठ गईं ।

लगभग आधा घंटे के बाद सास ने ताँगेवाले को अपने पुत्र का पता दिया और उसे बुलाकर लानेको कहा । ताँगेवाला काशीनाथ के पास पहुँचा, सारा वृत्तांत सुनाया और काशीनाथ घटना स्थल पर हाज़िर हुआ । अब माँ आँखों में आँसू भरकर बोली—"बेटा, देखो तुम्हारी पत्नी के हठ के कारण मेरी कैसे फजीहत हुई !"

बहू हाज़िर-जवाब बनते बोली—"मेरे साथ से होड़ क्यों लगाती हैं ? अगर सासजी आगे जाकर बैठती तो यह फजीहत ह होती! ओह, लगता है मेरी कमर टूट गई है ।" कहते कहते जानकी रो पड़ी ।

अपनी माँ और बीवी की यह दुरवस्था देख कर काशीनाथ का दिल पसीज उठा । उसने दोनों को समझाते हुए कहा—"चलो जो होना था, वह होकर रहा । मुझे खुशी होगी अगर

अब भी तुम दोनों के दिमाग़ ठिकाने लग जाएँ ।

सास और बहू दोनों कुछ देर तक सिर झुकाए मौन बैठी रहीं । उन्हें अपने हठ और होड़ पर नफ़रत हुई ।

जानकी ने अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया—इतना सारा होने पर भी अगर मेरा मन न बदला, तो मैं मनुष्य नहीं, राक्षसी कहलाऊँगी नहीं?"

माँ दुर्गा ने कहा—"बेटा, ग़लती तो मेरी है । मैं ज़रा समझदार बनती तो यह नौबत न आती । जाने मेरी अकल कहाँ चरने गई थी ? चलो, अब घर चलें ।"

काशीनाथ ने धक्का दिया—"अब घर कहाँ? अपने हठ और होड़ में घर में ताला किसी ने नहीं लगाया ।

डाकू हमारा सारा घर लूट ले गये । तुम दोनों अपना इरादा क्यों बदल रही हो? चली जाओ न !"

अपनी मूर्खता के कारण डाकू घर लूट ले गये यह ख़बर पाकर सास और बहू दोनों तड़प उठीं !

दुर्गा ने अपने आँचल से आँसू पोंछते हुए कहा—"मेरी मूर्खता के कारण ही यह सब हुआ । 'मेरी बारी, तुम्हारी बारी' की इस बीमारी के कारण डाकुओं को घर लूटने का मौक़ा मिला !"

"नहीं नहीं सासजी, यह तो सब मेरे हठ और अर्थहीन होड़ के कारण हुआ है । मेरी मूर्खता ने मेरे घर को डुबो दिया ।" नाक साफ़ करती हुई जानकी बोली ।

सास और बहू दोनों 'मेरा दोष है, मेरा दोष है' बताकर झगड़ा करने पर उतारू हो गईं ।

यह सब देख काशीनाथ हँसते हुए बोला—"अच्छे के लिए हो, या बुरे के लिए हो, होड़ और बारी लगाने की यह तुम्हारी आदत ठीक नहीं । तुम दोनों में वास्तव में परिवर्तन हुआ है या नहीं इसे आजमाने के लिए मैंने झूठ घर के लुट जानेकी बात बना ली । अब दोनों अपनी अपनी भूल समझ गईं न? चलो, अब गाड़ी पर सवार हो जाओ, घर चलेंगे ।"

काशीनाथ की इन बातों ने सास-बहू के मन में एक गुदगुदी पैदा कर दी ।

जल-राक्षस

किसी देश में एक तालाब के किनारे एक झोंपड़ी में एक ग़रीब किसान रहा करता था । उस किसान के तीन बेटे थे । अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद बड़े व मँझले भाई ने कपट करके रही-सही थोड़ी पैतृक संपत्ति पर कब्जा करना चाहा ।

वैसा निश्चय करने के बाद बड़े भाई ने कहा—"यह घर मेरे हिस्से का है ।" मँझले भाई ने कहा—"घर का सारा माल-असबाब मेरा है ।" अब छोटे भाई ने पूछा—"तो बताओ मेरे हिस्से में कुछ है कि नहीं?"

बड़े व मँझले भाई ने एक स्वर में कहा—"ओह,, तुम्हारे लिए कुछ हिस्सा चाहिए? घर और घर का सब माल-असबाब छोड़ कर जो कुछ रहेगा सो तुम्हारा !"

छोटे भाई ने सारा घर छान मारा । घर के कोने में पड़ा ताड़ के रेशों से बुना एक रस्सा अपने हाथ में लिया । बड़े भाइयों ने बड़ी उदारता के साथ छोटे भाई को वह रस्सा लेने की अनुमति दी ।

रस्सा अपने कंधे पर लाद कर छोटा भाई तालाब के किनारे पहुँचा । तालाब के किनारे एक पुराने पेड़ के नीचे बैठकर अपनी आजीविका के बारे में सोचने लगा । तब उसे कुछ दूरी पर एक गिलहरी दिखाई दी ।

उसी क्षण उसके मन में एक विचार कौंध गया । उस रस्से से जाला बनाकर उसमें तरह-तरह के जानवर फँसाये जा सकते हैं । और उनके चमड़े बेच कर अपना गुज़ारा किया जा सकता है । उसने झट एक जाला बनाया और उस में गिलहरी को पकड़ा । पर गिलहरी को फँसाने के बाद उसे मार डालने को उसका मन नहीं हुआ । इस लिए उसने लकड़ियों का एक पिंजड़ा बनाया और गिलहरी को उसमें छोड़ दिया ।

इसी प्रकार उसने जाले की मदद से एक

२५ वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

खरगोश को पकड़ा और उसको भी पिंजडे में बन्द कर दिया ।

अब छोटे भाई ने तालाब के किनारे ही अपने रहने के लिए एक झोपड़ी बनाई और उस रस्से से तरहं-तरह के छोटे बड़े जाले बुनने लगा । एक बार उसने देखा कि एक भारी-भरकम भालू एक बड़ी गुफ़ा में घुस गया है ।

छोटा भाई जाला फैला रहा था, कि उसको तालाब के भीतर से एक विचित्र ध्वनि सुनाई दी । उसने सिर उठा कर ऊपर तालाब की ओर देख । देखा कि तालाब के पानी में कमर तक डूबा एक युवक राक्षस हाथ में पत्थर लिये खड़ा उसी की ओर घूर कर देख रहा है !

उस तालाब के तल में एक जल-राक्षस रहा करता था । वह पानी से कभी बाहर नहीं निकलता था । पर अगर कोई तालाब के पास पहुँच जाए तो अपने माया-जाल से उसको पानी के अन्दर खींच लेता । इस प्रकार उसने कई लोगों को मार कर अपार स्वर्ण जमा कर रखा है ।

किसान के छोटे बेटे ने तर्क कर लिया कि पानी से निकला वह व्यक्ति संभवतः उस जल-राक्षस का बेटा होगा ।

"हमारे तालाब के पास आकर तुम क्या करते हो?" राक्षस के बेटे ने पूछा ।

किसान के तीसरे बेटे ने कहा—"मैं इस तालाब पर जाल फैलाकर उसे खींचने जा रहा हूँ । तब जाल में कस कर तालाब सिकुड़ जाएगा । समझे?"

छोटे भाई की बात सुन कर राक्षस का पुत्र तुरन्त डुबकी लगाकर अपने पिता के पास पहुँचा और किसान के बेटे की कही बातें उनको सुना दीं ।

राक्षस ने अपने पुत्र को एक तरकीब बताई—"अगर वह यह काम करनेवाला है तो उसको ज़िंदा नहीं रहने देना चाहिए । तुम फिर पानी के ऊपर पहुँच कर उससे दाँव लगाओ कि वह तुम्हारे साथ पेड़ पर चढ़ जाए । पेड़ पर चढ़ते चढ़ते जब वह थक जाए गा तब उसको पानी में ढकेल दो । बाकी काम मैं निबटा लूँगा ।"

पिताजी की आज्ञानुसार राक्षस का बेटा पानी के ऊपर पहुँचा और उसने किसान के छोटे बेटे से कहा— "सुनो, तुम मेरे साथ पेड़

पर चढ़ जाओ, चलो मैं भी देखूँ !"

"देखो, अभी मैं एक ज़रूरी काम में व्यस्त हूँ । इस वक्त मेरी आँखें ठीक काम नहीं कर रही हैं । तुम चाहो, तो मेरे छोटे भाई से दाँव लगाओ ।" यों कहते हुए किसान के छोटे बेटे ने लकड़ी के पिंजड़े में से गिलहरी को मुक्त किया । राक्षस का पुत्र पेड़ के तने तक पहुँचा भी नहीं था कि गिलहरी तुर्र करते हुए पेड़ की चोटीवाली डाली तक रेंगती हुई पहुँच गई ।

राक्षस के पुत्र ने अपने पिता के पास पहुँच कर सारा समाचार सुना दिया ।

अब पिता ने एक नया उपाय बताया— "तुम उसको दौड़ने की प्रतियोगिता के लिए ललकारो । उसको तालाब के चारों तरफ़ दौड़ा दो । यों दौड़कर जब वह थक जाएगा, तब उसे तालाब में ढकेल दो ।"

राक्षस का पुत्र फिर पानी के बाहर आया और किसान के लड़के से उसने कहा— "अच्छा, अब की बार दौड़ने की प्रतियोगिता में हिस्सा लो चलो ।"

"मुझे ठीक नहीं दिखाई देता । फिर मैं अपने काम में व्यस्त हूँ । अगर चाहे तो मेरे छोटे भाई के साथ दाँव लगाओ ।" इतना कहकर किसान के छोटे बेटे ने अब की बार खरगोश को पिंजड़े से बाहर छोड़ दिया । खरगोश बाहर निकलते ही वायुवेग से दौड़ने लगा और पल भर में आँखों से ओझल हो गया ।

राक्षस का बेटा फिर अपने बाप के पास पहुँचा और सारा वृत्तान्त कह सुनाया ।

"ओह, यह तो बड़ी विचित्र बात है । अब की बार तुम उसके साथ मल्ल-युद्ध करके उसकी हड्डी-पसली तोड़ दो और फिर उसे पानी में ढकेल दो ।" राक्षस ने सुझाया ।

राक्षस का पुत्र फिर पानी से ऊपर आया और उसने किसान के छोटे बेटे को ललकारा— "आओ, मेरे साथ मल्ल-युद्ध करोगे ?"

उसने कहा— "अभी तक मेरा काम पूरा नहीं हुआ है । सामनेवाली गुफ़ा में मेरे दादा रहते हैं । तुम पहले जाकर उनसे मल्ल-युद्ध करो । अगर जीत गये तो मैं तुम से जूझूँगा ।"

राक्षस का पुत्र गुफ़ा में गया और वहाँ

भालू-दादा को छेड़ बैठा । भालू ने उसको कस कर पकड़ लिया और अपने नाखूनों से उसे घायल कर दिया । किसी तरह जान बचाकर वह वहाँ से भागा और अपने पिता के पास पहुँचकर सारा किस्सा सुनाया ।

यह सब सुनकर जल-राक्षस का कलेजा काँप उठा । उसने अपने पुत्र से कहा– "बेटा, यह कोई बड़ा ही उद्दण्ड मालूम होता है । तुम जाकर उससे पूछ लो– "कितना सोना देने से वह हमारा तालाब छोड़ कर यहाँ से चला जाएगा ?"

राक्षस का बेटा दौड़ा दौड़ा किसान के बेटे के पास पहुँचा और उससे पूछा । किसान के लड़के ने कहा– "तुम सोना तो ले आओ ।"

राक्षस का लड़का कुछ सोना ले आया । किसान के छोटे लड़के ने कहा– "बस इतना ही, यह पर्याप्त नहीं है !" राक्षस का लड़का फिर वापस गया और और सोना ले आया । किसान के पुत्र को इससे भी संतोष नहीं हुआ ।

राक्षस खीझ उठा और अपना सारा सोना अपने पुत्र के साथ भेज दिया । राक्षस के पुत्र ने स्पष्ट कर दिया– "देखो, इससे अधिक एक रत्ती भर सोना भी मेरे पास नहीं है !" किसान के लड़के ने सारा सोना बटोरा और वह अपने भाइयों के पास पहुँचा ।

बड़े भाइयों ने विस्मय में आकर छोटे भाई से पूछा– "अबे, तुम्हें इतना सोना कहाँ से प्राप्त हुआ ?"

छोटे ने उत्तर दिया– "इस रस्से की मदद से मैंने यह सारा सोना कमाया, समझे ?"

"तुम यह मकान और इसका सारा माल-असबाब लेकर हमें वह रस्सा दे दो ।" गिड़गिड़ा कर बड़े भाइयों ने छोटे से कहा ।

छोटे भाई ने वह रस्सा अपने बड़े व मँझले भाई को दे दिया । इसके बाद उसने उस पुराने मकान की मरम्मत करवाई । जो सोना उसे प्राप्त हुआ था, उससे खेत, गायें और भैंसें खरीद लीं और सुख के साथ जीवन-यापन करने लगा ।

आज तक किसी को पता नहीं चला कि बड़ा और मँझला भाई दोनों कहाँ गये?

पुरोहित की युक्ति

जाधोजी भट्ट सुरेन्द्रकुमार के राजवंश का पुरोहित था । उसकी आयु नब्बे साल की हो गई थी । वह राजदरबार में नहीं जाता था, पर साल में एक बार अपना वार्षिक वेतन लेने के लिए राजमहल ज़रूर जाता था । आजकल उसके स्थान पर उसका भतीजा वल्लभजी राज-पुरोहित का काम संभाल लिया करता था ।

अपने पद से निवृत्त होने के बाद भी जाधोजी भट्ट दरबार के मामलों में रुचि रखता था । वल्लभजी जब घर लौटता तो जाधोजी दरबारी मामलों की जानकारी प्राप्त किया करता था ।

एक दिन जाधोजी भट्ट पूजा में मग्न था, तब वल्लभजी ने आकर समाचार दिया कि राजकुमार राज्य का बँटवारा करनेवाले हैं । उस राज्य में कुल मिलाकर दो नगर और बारह गाँव थे । राजकुमारों के नाम थे अर्जुन सिंह और सबल सिंह । उनमें से एक को एक नगर के साथ छः गाँव और दूसरे को दूसरे नगर के साथ बाकी छः गाँव प्राप्त होनेवाले थे । सुरेन्द्रनगर राजधानी थी, और दोनों भाई उसे चाहते थे । इस कारण बँटवारा ठीक नहीं हो पा रहा था ।

जाधोजी भट्ट का पूजा का काम समाप्त हुआ । उसकी इच्छा थी कि ज्येष्ठ राजकुमार अर्जुन सिंह को राजधानी सुरेन्द्रनगर प्राप्त हो । उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि राजधानी अर्जुनसिंह को देकर दूसरे राजकुमार को किसी प्रकार से चूड़ा नगर दिलाना है ।

दूसरे दिन सुबह जाधोजी भट्ट दरबार में पहुँचा । अनपेक्षित रूप से उसको वहाँ पाकर सब दरबारियों को बड़ा आश्चर्य हुआ । जिस कमरे में दोनों भाई चर्चा कर रहे थे, जाधोजी वहाँ जा पहुँचा ।

राजकुमारों ने कहा– "पंडितजी, इतना परिश्रम करके आप क्यों यहाँ पर आये ? हमें खबर कर देते तो हमीं आपकी सेवा में न पहुँच जाते ?"

"बेटों, मैंने सुना कि तुम दोनों आपस में राज्य का बँटवारा कर रहे हो । खबर पाते ही तुम्हें आशीर्वाद देने चला आया, बस !" जाधोजीने जवाब में कहा ।

"पंडितजी, अभी तक फैसला नहीं हो पा रहा है कि बँटवारा कैसे करें ? मैं कहता हूँ कि मैं ज्येष्ठ हूँ, अतः चुनाव करने का अवसर प्रथम मुझे मिलना चाहिए । पर सबल का कहना है कि चूँकि वह छोटा है, चुनाव का अवसर सर्वप्रथम उसे मिलना चाहिए । पंडितजी, आप बुजुर्ग है, आप ही बताइए हम दोनों में से किसका कथन उचित है ?" अर्जुनसिंह ने पूछा ।

जाधोजी भट्ट ने कहा– "मुझे क्यों धर्म-संकट में डालते हो ? मेरी दृष्टि में तुम दोनों बराबर हो । और फिर राज-कार्यों में मैं दखल देना नहीं चाहता । मैं सब कुछ छोड़कर राम नाम का जप कर रहा हूँ ।"

"इसीलिए आपका निर्णय हमें शिरोधार्य है । आप जो निर्णय करेंगे, हम दोनों उसे मान लेंगे ।" राजकुमारों ने एक स्वर में कहा ।

"तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ । ग़ौर से सुनो । प्राचीन काल में एक ऋषि के पास दो शिष्य रहा करते थे । बारह वर्षों तक गुरु-कुल में रह कर उन्होंने सारी विद्याएँ सीख लीं, और अब गुरु से अपने घर जाने की अनुमति माँगी । ऋषि ने अग्नि-कुंड से भस्म निकालकर दोनों शिष्यों के हाथों पर
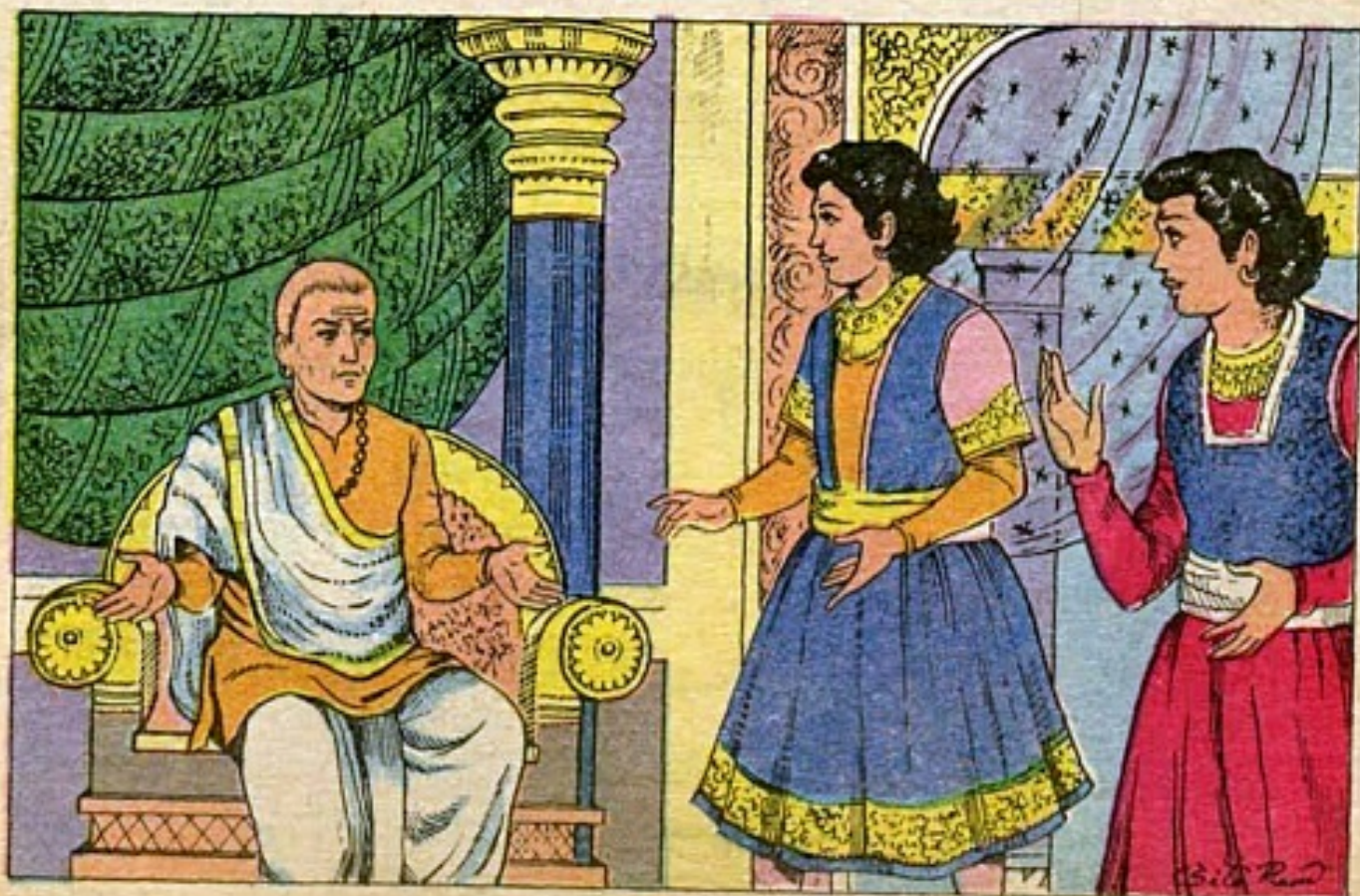
रखा । एक शिष्य ने तत्काल उस भस्म को मुँह में डाल दिया । दूसरे ने उसे फेंक दिया । जिस ने भस्म निगला था वह महान् पंडित बना और सुखमय जीवन बिताने लगा । दूसरा बुद्धू बनकर गुरु की निंदा करने लगा कि गुरुजी ने उसे अच्छी शिक्षा नहीं दी ।"

"तुम मुझे वचन दो कि मेरी निंदा नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें कल बँटवारे का उपाय बताऊँगा ।" जाधोजी ने समझाया ।

दोनों राजकुमारों ने पुरोहित की बात खुशी से मान ली । उनको विश्वास था कि जाधोजी किसी के साथ अन्याय नहीं करेंगे । वे ऐसा ही निर्णय लेंगे, जिसमें दोनों की भलाई तो निहित होगी ही, प्रजा का भी कल्याण होगा ।

दूसरे दिन सुबह जाधोजी राजभवन में पहुँचा । उनके साथ केवल दो राजकुमार एक कमरे में पहुँचे । जाधोजी ने दो तह किये कागज़ निकाले और कहा– "इन पर मैंने सुरेन्द्रनगर और चूडा नगर लिखा है । तुम, दोनों एक एक कागज़ उठाओ । जिसके कागज़ पर जो लिखा होगा, वही उसे मिलेगा । उस नगर के आसपास के गाँव उसे प्राप्त होंगे ।"

इस पर अर्जुनसिंह ने झट एक कागज़ उठाया और उसे खोले बगैर मुँह में डालकर निगल डाला ।

सबल सिंह ने आश्चर्य से पूछा– "भैया, तुमने यह नहीं देखा कि उसमें कौन नगर का नाम लिखा था ?"

अर्जुन सिंह ने जवाब दिया– "इसमें क्या बात है ? तुम्हारे कागज़ पर जो नाम लिखा न होगा, वही मेरा होगा न ?"

सबलसिंह ने अपना कागज़ उठाकर खोला । उस पर 'चूडा नगर' लिखा हुआ था । इस प्रकार राज्य का विभाजन हो गया । अर्जुन सिंह को सुरेन्द्रनगर और आसपास के छः गाँव मिले । चूड़ानगर और इर्द-गिर्द के छः गाँव सबल को मिले । दोनों खुशी-खुशी राज्य-कारोबार चलाने लगे । सुरेन्द्रनगर के लोग कहा करते हैं कि वृद्ध पुरोहित ने दोनों कागज़ों पर 'चूड़ा नगर' लिखकर धोखा दिया है ।

प्रकृति के आश्चर्य

सब से बड़ा मेंढ़क

पश्चिम आफ्रिका के गोलियत जाति का मेंढ़क ८१.५ सें.मी. (३२. ०८ इंच) तक बढ़ता है । सारे मेंढ़कों में बड़ा इस जाति का मेंढ़क ३,३०८ ग्राम वजन का होता है ।

बिटाकिल बैक नामक नर-मछली मादा मछलियों के द्वारा अण्डे देने के हेतु पानी के अन्दर घोंसले बनाती है ।

घोंसला बनानेवाली मछली

उपकरण इस्तेमाल करनेवाला जानवर

उपकरण इस्तेमाल करनेवाले सस्तन जानवरों में सीआटर एक है । सीआटर पीठ के बल पर ऊपर मुँह करके अपनी छाती पर पत्थर रख कर तैरते हुए छोटी मछली को मार कर खा जाती है ।

अपने शिशु को दीजिए सैरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरुआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सैरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सैरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सैरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सैरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सैरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

मुफ़्त! सैरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सैरेलॅक, पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

सैरेलॅक का वादा : स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

RK SWAMY/FSL/3112/HIN

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां सितंबर १९८९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

M. Natarajan

V. Muthuraman

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ जुलाई १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

मई के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : **सीढ़ियों की कतार!**

द्वितीय फोटो : **कुर्सियों का अंबार!!**

प्रेषक: ओम् उपाध्याय, कस्तूरबा नगर, हबीबगंज, भोपाल (म. प्र.)

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा: रु. ३६-००

चन्दा भेजने का पता:

डॉल्टन एजेन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये:

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

JUNIOR
QUEST
Where finding out is fun
AACHOO
In your JUNE Issue...
Toss up your own mixture!
Track down the Red Hot Ruby!
Get set for rhyme time!
Meet the muddled magician
Quiz your way thro' India!
Peep into the world of ants!
Plan an exciting puppet show!
Inside:
A stunning
wildlife poster
A+B-2
BUY TODAY!
Corner
Question
Special!
A Chandamama
Vijaya Combines
publication